सभाश्रृंगार

श्रीयुत मुन्शी भोगनारायण की
आज्ञानुसार लाला कि
शनलाल ने मनुष्यों
के चित्त विनोद के लिये
उर्दू आरायशमैह़फ़िल
से उल्था किया

आगरा

मतबअ मुफीद खलायक में
मुन्शी भोगनारायण के प्रबं-
ध से छपाई॥

संवत् १९२३

कीमत ८॥ قیمت فی جلد

॥श्री गणेशाय नमः॥

धन्य धन्य परमेश्वर परम कृपाल दीन दयाल शरणागत बत्सल करतुं न करतुं अन्यथाकरतुं समर्थ सर्व व्यापी अंतर यामी जिसने जगत को असंख्य आकृति और आशय का निर्मित कर परमानुकंपा से अपनी प्राप्ति और मुक्ति के नाना साधन निर्माण किये जिसमें सब मनुष्य अपनी अपनी रुचि के अनुसार उसका भजन स्मरण कर इस भव सागर से उतर पार हों उन सब साधन में परोपकार और सहन शीलता उत्तम है एतदर्थ हातिम ताई का इतिहास बरणन किया जाता है इस इतिहास को पहिले किसी ने फारसी की सरल बोली में बनाया था और सन १८०२ ईसवी में दिल्ली के रहने वाले सैयद हैदर बख्श ने इसको उरदू में तरजुमा किया और उसका नाम आरायश महफ़िल रक्खा परंतु जहाँ उचित जाना अपनी बुद्धि के अनुसार कहानी बढाने के लिये कुछ अधिक भी की जिसमें सुनने वालों को हर्ष होवे अब सन १८६५ ईसवी संवत १९२२

मैं कृष्णलाल माथुर कायस्थ दिल्ली के बासी वर्तमान समय में आगरा निवासी ने भाषा बनाया और सभा शृंगार नाम रक्खा - लिखने वाले ने यों लिखा है कि अगले समय में नैनार्मी यमन का बादशाह था अतिऐश्वर्य वान धन वान सैना पति कंचन रत्नों से परिपूर्ण और उसकी प्रजा और सेना अपार थी अपने चचा की बेटी के साथ विवाह किया उस्से एक पुत्र परम सुंदर चंद्र समान उत्पन्न हुआ यह अति आनंद दायक समाचार सुन प्रवीन ज्योतिषियों मंत्रियों पंडितों को बुलाके कहा कि तुम अपनी बुद्धि के अनुमान और पुस्तक प्रश्न के अनुसार बिचारकर के कहो कि इस लड़के का भाग्य कैसा है उन्होंनें बिचारा बिचारा तो सब प्रकार ऐश्वर्य वान पा के बिनती की कि पृथ्वी नाथ हमको अपनी बिद्या से ऐसा प्रगट होता है कि यह शाहज़ादा सातों देश का बादशाह होगा और सदा हरिहित सब काम करेगा और उसका नाम सूर्य के समान प्रलय परियंत जगत में प्रकाशित रहेगा यह सुन बादशाह को अति आनंद और परम हर्ष हुआ और पर्मेश्वर का धन्यबाद कर उन लोगों को धन से परिपूर्ण करदिया और उस बालक का नाम हातिम रख अपने मंत्रियों से कहा कि तुम शीघ्र यह बात बिदित कर दो कि मेरी राज्य में आज जिसके घर बालक उपजा हो वह आज के दिन से बादशाही नौकर है और उनके माता पिता राज मंदिर में पहुंचा जावें उनका पालनभी यहीं होगा उसके देश में उस दिन छः हज़ार लड़के उत्पन्न हुये थे यह आग्या सुनते ही सब के माता पिता अपना अपना बालक राज मंदिर में पहुंचागये उसी समय छः हज़ार दाइयां नौकर रक्खी गईं और एक एक लड़का उनको सौंपा गया और चारि दाइयां हातिम के लिये निमत हुईं वे किस किस भांति के रूपवती थीं देदे चुमकारतियां थीं कि वह किसी

प्रकार दूध पिये पर यह आंखें न खोलता और किसी का स्तन
मुख में न लेता जब यह समाचार बादशाह को पहुंचा वह
इस बात के सुनतेही अति चिंता कर अपने मंत्रियों से कहने
लगा कि तुम सयानों को शीघ्र बुलवाओ सयानों ने आके वि
नती की कि हे प्रभू यह जगत का हातिम होगा अकेला दूध न
पियेगा पहिले सब बालकों को पिलवा के पीछे आप पियेगा
और जब तक जीता रहैगा अकेला भोजन और जल पान न
करैगा निदान जब वे सब लड़के दूध पी चुके तब हातिम ने
भी पिया और जब से जन्म हुआ न रोता न अकेला खाता औ
र न अचेत हो के सोता जब दूध छुडाया गया तब उन्हीं छ हज़ा
र लड़को के साथ खाता पीता सच तो यह है कि जिस दुखी दरि
द्री भूंखे प्यासे नंगे को देखता रुपया पैसा अन्न जल कपड़ा
वे दिये दिलाये न रहता दिन देने दिलाने में व्यतीत करता पर
मेश्वर की कृपा से जब चौदह वर्ष का हुआ जो धन रत्न पिता ने
एकत्र किया था उसको परमेश्वर के हेत उठाने लगा जो आखे
ट को जाता और कोई पशु पक्षी देख पड़ता तो उसको जीता ही
पकड़ के छोड़ देता और कभी किसी को कटुक बचन न कहता
और परमेस्वर ने रूप भी ऐसा दिया था कि जिस स्त्री पुरुष
ने देखा वह सहस्त्रों प्राण से आशक्त हुआ और जो कोई मार्ग
में पुकारता तो घोड़े की बाग थाम उसका न्याव ज्यों हीं उसी
क्षण करदेता और जो न मानता तो बैठे बैठे बातों में समझा
देता और कभी अन्याय न चाहता अपने पराये को समान जा
नता ईश्वरेच्छा से थोड़े ही दिनों में तरुणाई की झलक से रू
प का चमत्कार दूना हुआ तो एक एक मनुष्य को यह शिक्षा क
रने लगा कि सब जीवों को ईश्वर ने उत्पन्न किया है उस जगत
करता की रचना देखिये कि उसने अपनी सामर्थ्य से चौरासी
लक्ष प्रकार के जीव उत्पन्न किये हैं उसका कौतुक निहारिये

और धन्यबाद कीजिये और अपना जीवन बीर वृत्ति और सु
यश से व्यतीत करना चाहिये और उसकी सुंदरता और सा
धु प्रकृति और बीरता और दातव्य एक एक नगर और ग्राम
में प्रसिद्ध हुई जिस जिसने सुना उस उस के मुख से सहसा
धन्य धन्य शब्द निकला और बहुधा लोग उसके देखने को आ
ते और अत्यंत प्रसन्न हो अपने अपने घर जाते एक दिन व
ह किसी बन में आखेट के लिये गया वहां एक सिंह गरजता
हुआ सन्मुख देख पड़ा इसने अपने मन में चिंता कर कहा कि
जो अस्त्र मारता हूं तो यह अन बोलता पशु घायल होता है
और जो छोड़ देता हूं तो मेरे प्राण जाते हैं निश्चय है कि यह ल
पके और मुझे खाजाय इन दोनों बातों को सोच विचार यह जी
में ठहराया कि जो यह मेरा मान्स खाके तृप्त हो तो इस बात
से क्या उत्तम है मुझको पुण्य होगा उसका पेट भरैगा यह शो
च कर उसके आगे गया और कहने लगा कि हे बनचर सिंह
मेरा और मेरे घोड़े का मान्स तेरे आगे है जिस पर मन चल
ता हो उसे खा कर अपना पेट भर जहां चाहे वहां चला जा यह
बात सुनते ही वह अपना शिर झुका हातिम के चरणों पर
गिर पड़ा और अपनी आखें उसके तलवों से मलने लगा
हातिम ने कहा कि हे सिंह हातिम की उदारता से दूर है जो तू
भूखा जाय जो मुझको नहीं खाता तो मेरे घोड़े ही को खाके अ
पने बन को चला जा वह न बोला और सिर झुका के चला गया
निदान अपने नगर में अपने सहचारियों सहित रहता औ
र सब संसारियों के काम ईश्वर हेत करता ॥ ——

पहिली कहानी में बरज़ख सौदागर की बेटी हुस्न
बानू की ख़ुरासान से निकाले जाने और किसी बन
में अशंख्य धन रत्न उसके हाथ आने और मुनीर
शामी शाहज़ादे का उस पर आशक्त होने और

हातिम का सहाय करने का बरणन ॥ ॥

सुना है कि खुरासान देश का एक बादशाह था कई लक्ष सेना
सदा उसके पास रहा करती और न्याय मैं भी ऐसा था कि बाघ
बकरी को एक घाट पानी पिलाता और अपने बेटे का भी पक्ष
न करता उसके नगर में बरज़ख नाम एक सोदागर अति ध
नवान प्रतिष्ठित रहता था अपने गुमाश्तों को देश देश मैं
बेपार की बस्तु देकर भेजता और आप अपने घर में सुख पू
र्वक बास करता और बादशाह से भी ब्योहार बना लिया
था और बादशाह की भी उस पर अत्यंत कृपा दृष्टि रहती
बहुत दिन पश्चात उसका मरण समय आ पहुंचा और आयु
र्दा उसकी परिपूरण हुई और उसके केवल हुस्नबानू ना
मी एक लड़की थी दूसरा कोई बेटा बेटी न थी उसकी सब सं
पदा उसी लड़की को मिली उस समय वह बारह बर्ष की थी
निदान उसके पिता ने सब संपदा उसी को दे और उसे बादशाह
को सौंप परलोक की यात्रा की बादशाह ने भी उसे अपनी बेटी के
समान रक्खा और उसके धन रत्न का कुछ लालच न किया औ
र वह संपदा सब की सब उसी को दी कुछ दिन में जब वह लड़
की सब समझने लगी तब अपनी सुबुद्धि और भलाई से दाई
को बुलाके कहने लगी कि हे दयावान माता संसार बड़ा कठि
न और पानी के बुलबुले समान है इसका मिटना कुछ बड़ी
बात नहीं इतनी संसार की संपदा मैं अकेली लेके क्या करूंगी
उत्तम सम्मत यही है कि आज मैं इसको ईश्वर हेत लुटा दूं औ
र आप को संसार के बंधन में न डालूं और बिवाह भी न करूं
और रात दिन ईश्वर के भजन स्मरण में ब्यतीत करों इसलिये
तुम से पूछती हूं कि इस्से कैसे छुटकारा पाऊं जो उचित जानो
सो कहो दाई ने पहले दोनों हाथों से बलायें ली और कहा
कि ए मेरी प्राण प्यारी तू इन सातों बातों को लिखकर अपने

द्वार पर लगादे और यह कह कि जो कोई मेरी इन सातों बातों के
पूरी करैगा मैं उसी को अंगीकार करूंगी सातों बातें येहैं पहि
ली बात यह है कि एक बार देखा दूसरी बार देखने का अभिला
ष है दूसरी बात यह है कि भलाई कर और समुद्र में डाल - ती
सरी बात यह है कि किसी से बुराई न कर जो करैगा तो वही पा
वेगा - चौथी बात यह है कि सच बोलने वाले को सदा सुख है
पान्चवीं बात यह है कि निदा परबत के समाचार लावे - छठवीं
बात यह है कि वह मोती जो मुरगावी के अंडे के समान इन दि
नों मेरे पास हैं उसकी जोड़ी लादे - सातवीं बात यह है कि ह
म्माम बादगर्द के समाचार बतलावे हुस्नबानू ने दाई की इस
बात को सुनके प्रसन्न किया और अपने जीमें कहा कि ऐसा
कौन होगा जो इन सातो बातों के उत्तर देगा इसी भ्रम से वह आ
ठों पहर जप तप किया करती एक दिन अपने कोठे पर बैठे हु
ये बाज़ार का तमाशा देख रही थी कि इतने में एक फ़कीर देख
ने में बड़ा साधु चालीस मुरीद साथ लिये हुये एक ओर से आ
निकला और पांव धरती पर न धरता वेई उसके साथी सो
ने चांदी की ईंटें पाव के नीचे रख देते वह उन पर पांव रखता
चलाजाता हुस्नबानू ने जो उसे ऐसी भांति आते देखा तो अ
ति हर्ष कर दाई से कहा कि अम्माजान यह फ़क़ीर कोई बड़ा
सिद्ध जान पड़ता है जो ऐसे चमत्कार से चलता है उसने क
हा कि अम्माबारी ये बादशाह के पीर हैं महीने में दो चार बेर
बादशाह इनके घर जाते हैं और ये भी कभी कभी उनके पा
स आते हैं इसके समान इस समय संसार में कोई महात्मा
नहीं क्योंकि यह बड़ा धर्मिष्ट और रूपावान है हुस्नबानू ने
इस बात को सुन के कहा कि जो तुम आग्या दो तो मैं इस महा
त्मा का एक दिन न्यौता करौं और घड़ी दो घड़ी के लिये अपने
घर बुलाऊं और अपनी आंखें उसके पैरों पर मलौं दाई ने

कहा कि मेरी प्राण प्यारी यह काम तू बे धडके कर यह दृष्टान्त
प्रसिद्ध है कि आखें सुख कलेजे ठंढक निदान उसने किसी के ह
थ उस महात्मा को कहला भेजा कि जो किसी दिन आप महा
त्माओं के समान मेरे अंधेरे घर को अपने चरणों से प्रकाशि
त करै तो इस दासी के लोक परलोक दोनो बन जावैं और अपने
अभिलाष के पात्र को कामना के रत्नों से परिपूर्ण करैं वह
गया और उसका संदेश सुना के कहा कि महात्माओं को उचित
है कि छोटों पर दया करैं इस बात को उसने अंगीकार किया
और कहा कि मैं अवश्य आऊंगा क्योंकि यह कहा है कि जो को
ई ऐसी बात न मानै वह तपस्वी नरक में गिरै परंतु आज तो मु
झ को कुछ काम है कल्ह प्रातःकाल आऊंगा यह समाचार
हुस्न बानू ने सुना कि कल दो चार घड़ी दिन चढ़े वे महात्मा
अपने चालीसों शिष्यों सहित मेरे घर पधारेंगे इस समा
चार के सुनते ही उसने भांति भांति के खाने पकवाये और
कई थाल मेवे मिठाई के और कई पाटम्बरों और कंचन
वस्त्रों और रुपये मुहरों और रत्नों के सजवा रक्खे इस आ
शा पर कि जगत के महात्मा कल्ह मेरे घर आवैंगे तब ये स
ब वस्तु मैं उनके आगें धर अति दीन हो पैरों पर गिरूंगी कि
इतने में प्रातःकाल हुआ और वे महात्मा उन्हीं चालीसों शि
ष्यों के साथ अपनी पुरानी रीति से सोने चांदी की ईंटों पर
पांव रखते हुये हुस्न बानू के घर आ पहुंचे और हुस्न बानू
ने द्वार से बैठने की जगह तक ज़री का बिछौना पहिले से
बिछवा रक्खा था उस को रौंदते हुये राज्यासन पर जा बैठे
और हुस्न बानू के सेवक धन रत्न के थाल उनके सामने लाये
उन्होंने किसी को अंगीकार न किया और कहा कि यह वस्तु मेरे
किस काम की है फिर वे भीतर गये और कई थाल अच्छे अ-
च्छे वस्त्रों के लाये उसने वे भी पसन्द न किये फिर वे महल

ठेंगये और बहुत से थाल मेवे मिठाई के लाये और एक बड़ा दस्तर ख़ान बहुत अच्छा बिछा के उस पर चुन्ने लगे वे थाल सोने चांदी के बासनों से भरे और उनमें भांति भांति के खाने भरे थे और राजों के बैठने योग्य बिछौना बिछाया और ज़रबफ़्त के परदे कलाबतूनी डोरियों के दरों पर बंधे थे और उसके आगें एक नमगीरी भी सुनहरी रुपहली बिनावट का सोने चांदी की चोबों पर मोतियों की झालर का झमझमाता था और सेवक लोग उत्तम वस्त्र और जड़ाऊ गहने पहिने हुये सजे सजाये सोने चांदी के रत्न जटित आफ़ताब चिलमची लाके हाथ धुलवा खड़े होके बिनती करने लगे कि हमारी बीबी का अभिलाष है कि आपु कुछ भोजन करैं यह बात सुन वह छली भोजन करने लगा और उस सोने चांदी की जड़ाऊ वस्तुओं को भाफ़ के अपने मन में कहता कि बरज़ख़ सौदागर कोई बड़ा धन वान था कि इतनी संपदा राजों के योग्य छोड़ गया आज ही रात किसी प्रकार अपने घर ले जाना चाहिये इसी चिंता में उस कुकर्मी ने थोड़ा सा भोजन कर हाथ खैंच लिया फिर वे सेवक जड़ाऊ अतरदान ले आये उसने वह अतर अपनी दाढ़ी और कपड़ों में मला और सब जड़ाऊ बासनों को अटकला ऊपर से हुस्न बानूं को दुआयें दे बिदा हुआ इतने में रात होगई और सब लोग उस महा दुष्ट की सेवा के काम काज में दिन भर के थके मांदे रात के होते ही पैर फैला के अचेत हो सो रहे न उन्होंने कोठों को बंद किया न उन वस्तुओं को ठिकाने से रक्खा पहर रात बीते वह डकैत मनुष्य के आकार पिशाच के प्रकार उसी अपने चालीसों चोरों के साथ उसके घर में आया और सब धन रत्न संपदा लूटने लगा इस बीच जो थोड़े बहुत लोग जाग उठे सो उन डकैतों के हाथ से घायल हुये कुछ मारे गये हुस्नबानू अपने कोठे

की खिड़की से झांक झांक देखती और उनको पहिचान पहिचान हाथ मल मल कहती कि हाय हाय यह तो वही निगोड़ा फ़क़ीर और उसके साथी हैं इसका इलाज कोई क्या करै रात तो सोच में काटी भोर होते ही उन मुरदों और घायलों को चारपाई में डाल बादशाह की डेवढ़ी पर ले गई और खड़ी हो पुकार के दोहाई देने लगी कि मैं लूटी गई बादशाह ने कहा कि कौन है और किस के सताने से ऐसा रो रही है द्वारपालों नें बिनती की कि बरख़ास्त सौदागर की बेटी दो चार चारपाइयों पर मुर्दे और घायल लाई है और रो रो के कहती है कि जो बादशाह सलामत कृपा करिकै मुझ को अपने सामने बुलवावैं तो अपना दुख निवेदन करूं इस बात के सुनते ही बादशाह ने उसे बुलवा लिया और समाचार पूछा उसने प्रणाम कर हाथ जोड़ के कहा कि आपकी आयुर्दाय बढ़े और न्याय का सूर्य प्रलय परियन्त प्रकाशित रहै कल के दिन इस लौंडी ने उस फ़क़ीर का न्योंता किया था सो उसने यह उत्पात किया कि पहर रात गये अपने चालीसों साथियों समेत आके मुझ दीन दुखी बिन मा बाप की लड़की का घर लूटा दस बीस मनुष्यों को घायल किया और दो चारों को मारडाला और ग्यारह बारह लाख रुपये के अनुमान का धन रत्न और वस्तु लूट ले गया परमेश्वर उसका मुह काला करै॥ कि उसने मुझै ऐसा सताया इस बात के सुनते ही बादशाह आग होगया और कहने लगा कि हे मूर्ख कुबुद्धी तू कुछ भी समझती है कि ऐसे महात्मा को ऐसा कलंक लगाती है वह संसार की सब वस्तु को तुच्छ समझता है हुस्न बानू ने फिर कहा कि प्रभू ऐसे महा दुष्ट को महात्मा न कहिये यह दुष्टता में पिशाच से भी अधिक है आप क्या आज्ञा करते हैं इस बात के सुनते ही बादशाह को और भी क्रोध हुआ और ताव खाके कहने लगा अरे कोई है इस दुर्बुद्धि लड़की को मेरेही सामने पथ्थरों से मार डार

डालैं कि यह अपना फल पावै जिसमें औरों को भय हो कि फिर को ई ऐसे महात्मा को ऐसी बात न कहै इतने में एक परम चतुर औ र शुभचिन्तक मंत्री अपनी जगह से उठा और सिंहासन का पाया चूम बिनती करने लगा कि प्रभू यह वही बरज़ख सौदागर की बेटी है कि उसके बाप के जीते जी आप उसके सिर पर परम अ नुग्रह से हाथ फेरते थे और प्यार करके अपने पास बिठालेते थे आज उसको पत्थरों की मार से मारे डालते हो जो उसको मा र डालैंगे तो इन सब सेवकों के जी से इस बात का बिश्वास जाता रहैगा कि हमारे पीछे हमारे लड़के बालों का पालन न होगा और यह भय होजायगा कि जब हम मरजांयगे तो हमारी संतान की यही दशा होगी जो बरज़ख सौदागर की बेटी की हुई इस बात को अपने जी में निश्चय कर और अलग हो अ वकाश पाय भाग जायंगे और बैरियों से जा मिलैं और आप से बैर करैं जो उचित जाना सो बिनती की आगे आप की जो इच्छा हो बादशाह ने इ स बात को सुनके कहा कि ए प्रवीन मैंने तेरे कहने और बरज़ख सौदागर पर दृष्टि करने से इसके प्राण छोड़े जो यह अपना भ ला चाहती है तो आज ही इस शहर से निकल जाय और हमा रे लोग जाके इसे देश निकाला दे आवें और धन रत्न से लेके झाड़ू के तिनके तक उसके घर की सब वस्तु तोशेखाने में पहुंचा वें इस बात के सुनते ही बादशाही नौकर गये और उसको घर से बे घर करके जो बस्तु उस छली फ़क़ीर के हाथ से बची थी सबकी सब लूट लाये और वह लडकी केवल दाई के साथ कि सी बन में जा पड़ी घबराय घबराय बन में चारों ओर फिरती और दुःख दाई से कहती कि अम्मा ऐसा मुझसे क्या अपराध हुआ जो मैं ऐसे क्लेश में पड़ी वह उसको गले लगा के बलाय लेती दिलासा देती कि बेटी भाग्य की गति में कुछ उपाय नहीं चलता संतोष कर ईश्वर कृपा करैगा तो फिरि सब कुछ होर

हेगा ऐसेही रोती पीटती अपनी दाई समेत दूसरे बन मे जा प-
हुंची और धूप के मारे एक वृक्ष के नीचे जा बैठी दो चार दिन की
भूंखी प्यासी तो थीही इसे नींद आगई उसी वृक्ष के नीचे धरती
परसो रही तो स्वप्न में क्या देखती है कि एक वृद्ध पुरुष साधु प्रक
ति उजले कपड़े पहने हाथ में छड़ी लिये गले में माला डारे खड़ा
ऊं पहिने सरहाने खड़े कहता है कि तू दुःख और चिंता मत क
र कि ईश्वर बड़ा कृपालु और समर्थ है उससे कुछ आश्चर्य नहीं
जो तुझे फिर वैसीही कर दे इस वृक्ष के नीचे सात बादशाहत
की संपदा गड़ी है सो परमेश्वर ने तेरे लिये यहां छिपा रक्खी है
सबतू उठ और इस द्रव्य को ले और अपना मन परमेश्वर के स्म
रण में लगा उसने कहा कि मैं स्त्री और अकेली हूं कैसे इस धर
ती को खोदूं और इस असंख्य द्रव्य को अपने बश करों उसने कहा
कि तू एक लकड़ी से थोड़ा खोद फिर परमेश्वर की गति देख कि
वह किस कठिन काम को कैसा सुगम करता है इस बात के सुन
तेही हुस्न बानू चौंक उठी और अपनी दाई से ये बातें स्वप्न की स
बकी सब कहीं निदान उसने और उसकी दाई ने जो उस वृक्ष की
नइ अपने बल भर हिलाई और कुछ लकड़ी से खोदी तो सात कु
ठे अशरफ़ियों से भरे और भांति भांति के संदूक़ रत्नों से परि
पूर्ण उस मोती सहित जो मुरग़ाबी की अंडे समान था दिखला
ई दिये हुस्न बानू इस ईश्वर की दी हुई संपदा को देख बहुत प्र
सन्न हुई और ईश्वर का धन्य वाद और प्रणाम कर दाई से
कहने लगी कि अम्माजान तुम इसी घड़ी इसे छोड़ शहर की
ओर जाव और हमारे कुनबे के लोगों को और थोड़ी बहुत खा
ने पीने की बस्तु ले आओ उसने कहा कि तुझे अकेली छोड़ कैसे
जावं और क्योंकर लाऊं जो तेरे पास कोई और होता तो मैं जा
ती यह डर है कि कहीं कुछ और उत्पात न होजाय ये बातें कर
रही थी कि हुस्न बानू का कोका फ़क़ीरी भेष बनाये हुये वहां आ

निकला और सहसा उसके पांव पर गिर के सिर और आंख चूंम
ने लगा उसने उसको गले से लगालिया और रो रो के भरोसा दि
या कि धीर्य कर परमेस्वर ने इतना असंख्य धन रत्न दिया जि
सका प्रमाण नहीं होसकता तू इस समय राह के लिये खर्च ले
के शहर में जा और जितने मेरे कुनबे वाले हैं उनको यह सब बा
तीं जता के ले आ और अच्छे राज मजदूर भी बुलाला कि वे एक
बड़ा मकान बनावैं क्योंकि मेरा मनोर्थ है कि बहुत बड़ा एक श
हर बसाओं और उसका नाम शाहाबाद रक्खूं पर यह बात तू
किसीको प्रगट न करना वह इस बात को सुन के थोड़े से रुपये ले
शहर में गया और जो जो उसके जान पहिचान बड़ी दुर्दशा से
भीख मांगते फिरते थे उन सबको इकट्ठे कर उसके पास लेआ
या वे सब हुस्नबानू को देख बहुत प्रसन्न हुये और एक बड़ा
खींमा खड़ाकर आपुसमें रहने लगे यह काम काज कर जब उ
सने छुट्टी पाई तब फिर शहर में आया और म्यामारों के चौध
री से मिलके कहने लगा कि तुम थोड़े कारीगरों को अपने सा
थ ले उस बन में चलो मुझे तुम से कुछ काम है उसने यह बात
मान के अपने काम काजियों समेत उसके साथ होलिया वह
उनको साथ लिये हुस्नबानू के पास आया हुस्नबानू ने उनको
बहुत धीर्य और इनाम देके जिस काम के लिये बुलाया था।
उसमें लगादिया छः महीने में जब बहुत अच्छी एक हवेली
बन चुकी तब म्यामारों से कहने लगी कि अब तुम इसके आ
स पास एक बड़े शहर का डौल डालो उन्होंने कहा कि बिना बा
दशाह की इच्छा ऐसा बड़ा शहर यहां बसाना अच्छा नहीं य
ह बात सुनतेही हुस्नबानू मर्दाना भेष सज एक अरबी घोड़े
पर चढ़ थोड़ी सिपाहियों को आगे रख एक थाल भर रत्न और ए
क माणिक का मोर अपने साथ ले शहर की ओर चली बाद
शाह को यह समाचार पहुंचा कि एक सौदागर बचा बहुत सुप्

र आपके चरण समीप आने के अभिलाष से द्वार पर आया है बादशाह ने आज्ञा की कि उसको प्रतिष्ठा पूर्वक लाओ लोग उसको हाथों हाथ प्रतिष्ठा संयुक्त बादशाह के सामने ले आ ये वह उचित रीति और नीत सहित यथा योग्य स्थान पर खड़े हो और प्रणाम कर निवेदन के थाल तख्त के नीचे रख कृपा की आशा की बादशाह उस को देख प्रसन्न हुये अनुग्रह कर यों पूछने लगे कि तुम किस शहर के रहने वाले हो और किस का म के लिये यहां आये और तुम्हारा नाम क्या है वह हाथ जोड़ के बिनती करने लगा कि मैं सौदागर का बेटा हूं भाग्य वश मेरा पिता किसी शहर के समीप जहाज़ पर मारा गया मुझ को आप के चरण समीप रहने का बड़ा अभिलाष है आज मेरा अहो भाग्य था जो आप के चरण समीप आ पहुंचा यह आशा है कि आप ही के चरण समीप अपना जीवन व्यतीत करूं क्यों कि इस द्वार पर रहने से लोक परलोक दोनों की भलाई है और यह बिनती है कि जो आज्ञा हो तो उस जंगल में कुछ दिन रहूं और एक शहर बसा के उसका नाम शाहाबाद रक्खूं इस बात से बादशाह बहुत प्रसन्न हो और बहुत अच्छा खिल्अत दे कहने लगा कि तेरे माता पिता नहीं हैं उनकी जगह तू म मुझे समझो मेरे पुत्र समान हो जो चाहो सो करो जहां चाहो वहां रहो कुछ संदेह मन में न करो जो चाहो सो ले जाव हुस्न बानू प्रणाम कर कहने लगी कि प्रभू जो यह दास शाहजादे में गिना जाय तो मेरे नाम की कोई उत्तम संज्ञा ठहराई जाय जिसमें अधिक प्रतिष्ठा बढ़े अब वह एम नाम मेरे योग्य नहीं बादशाह ने इस बात को प्रसन्न कर उसका नाम माहरू शा ह रक्खा। फिर कहा कि बेटा वह जंगल यहां से बहुत दूर है जो चाहता है कि शहर के समीप अपने नाम से शहर बसा के उसमें आनंद से रहो उसने फिर बिनती की कि वह जंगल

बहुत मनोरम है दूसरे राज्य धानी के समीप शहर बसाना उचि
त नहीं अब कृपा करके म्यामारों को आज्ञा हो कि उस जंगल में
शीघ्र शहर बसावें बादशाह ने आज्ञा दी कि सब काम काज वा
ले जायं और उस शहर के बसाने में परिश्रम करें बादशाह
की आज्ञा से शहर बनने लगा और वह भी महीने में दो तीन
दिन बादशाह के समीप आया जाया करती थी नित्य नित्य का
रीगरों को इनाम देदे कहा करती कि शीघ्रता करो सरतोरन र
हैं वे उसके कहने से रात दिन परिश्रम किया करते थे दो बर्षमें
शहर बन गया और उसका नाम शाहाबाद रक्खा और कारीगरों
को बहुत सा इनाम देके बिदा किया फिर तो हुस्न बानू बहुधा
बादशाह के पास आने लगी एक दिन बादशाह के पास आई
उस समय बादशाह उसी फ़क़ीर महादुष्ट के घर जाया चाहते
थे हुस्न बानू को देखते ही कहने लगे कि बेटा आज जी चाहता
है कि हम तुम दोनों उस महात्मा परम साधू के पास चलें और लो
क परलोक अपना सुधारें क्योंकि ऐसे महात्मा के दर्शन से सं
सार की निवृत्ति है हुस्न बानू ने कहा कि सिद्ध कीजिये एक तो
ऐसे महात्मा के दर्शन से लोक परलोक की भलाई होती है दू
सरे आप के साथ चलना मेरे लिये इससे क्या भला है जो करूं
और इस उत्तम बात से हाथ उठाऊं पर जी में कहती थी कि ऐसे
महादुष्ट का मुह देखना न चाहिये पर क्या करूं बादशाह के ब
श हूं उनके साथ चलना अवश्य है यद्यपि उसका घर मेरे लि
ये मरघट है निदान बादशाह के साथ उसके घर गई और बा
दशाह उस राक्षस के आगे उसको सराहने लगे यह माहरू
शाह के नाम से बिदित थी अपना सिर झुकाये सराहना सुन
ती थी और चुपके चुपके कहती थी कि इतनी कृपा जो मुझ प
र करते हैं यह सब धन रत्न के कारण से है नहीं तो मैं वही बर
ज़ख सौदागरी की बेटी हूं जिसको अपने शहर से निकलवा

दिया था और धन सम्पति लूटि ली थी इतने में बादशाह उठे और फ़क़ीर से बिदा होने लगे माहरूशाह ने हाथ जोड़ बिनती की कि जो इन महात्मा के चरण मेरे घर में पड़े तो बड़ी कृपा हो और यह बात महात्माओं के स्वभाव से दूर नहीं उस महादुःख प्रगट में परम साधु ने कहा कि मैं आऊँगा तब माहरूशाह ने बिनती की कि मेरा घर शहर से बहुत दूर है इन को वहां जाने से बड़ा परिश्रम होगा उत्तम यह है कि यहां बेरज़ख सौदागर की हवेली बहुत अच्छी है और इन दिनों खाली पड़ी है जो दो चार दिन के लिये मुझ को मिले तो मैं ऐसे महात्मा की यथार्थ सेवा वहां करूं और अखंडित धन पाऊं बादशाह ने कहा कि बेटा तूने उसके समाचार कहां पाये उसने कहा कि इस शहर के लोग बहुधा उसकी सराहना करते हैं और उसका नाम भी अच्छे प्रकार लेते हैं बादशाह ने कहा कि बेटा वह हवेली मैंने तुझ को दी इस बात के सुनते ही उसने प्रणाम किया और अपने लोगों को साथ ले उस हवेली में गया फिर उस हवेली को बिगड़ी देखि के दीवारों से लिपट के बहुत रोया और लोगों से कहा कि इस हवेली की मरम्मत करके शीघ्र सुधारो यह कह के अपने शहर को चला गया एक महीना बीते न्योते की सब वस्तु बनवा के उसमें भेजी और कई चांदी सोने के थाल जड़ाऊ बासनों से भरे और बहुत से कपड़े कलाबतूनी सलमे सितारे के और एक माणिक का मोर और बहुत से रत्न अपने साथ लाया फिर अपने नौकरों को उस हवेली में छोड़ आप बादशाह के पास गया और हाथ जोड़ के बिनती करने लगा कि पृथ्वी नाथ मेरा मनोरथ है कि कुछ दिन बरज़ख सौदागर की हवेली में रहूं और आपके दर्शन प्रणाम के लिये नित्त आया करूं परंतु कल्ह उन महात्मा का न्योता करलूं बादशाह ने कहा कि जो तुम्हारे जी में आवे सो करो हम

री बादशाहत भी अपनी समझो यह बात सुन उसने उठ के
प्रणाम किया और बोला कि यह सब आप की कृपा है मैं तो आ
पका आज्ञानुवर्ती सेवक हूं निदान बादशाह से बिदा हो अ
पने बाप के घर मे न्योते की तयारी की फिर एक नौकर से कहा
कि तू उस छली फ़क़ीर के पास जा और मेरी ओर से बिनती
कर कि जो आप कल्ह मेरे घर पधारैं तो मानो इस दास को
बिन दामों मोल ले वह गया और उसी प्रकार बिनती की
उसने इस बात को माना और प्रातःकाल उसी अपनी रीति
से अपने साथियों को साथ लिये सोने चांदी की ईंटों पर पांव र
खता हुआ चला माहरू शाह ने जो मकान बादशाहों के यो
ग्य संवार रक्खा था उसमें उसको बैठाल के धन रत्न के था
ल जड़ाऊ मोर सहित निवेदन किये उसने अंगीकार न कि
ये तब माहरू शाह ने सब रत्न ताक़ों पर चुनवा दिये इसलि
ये कि उन पर उस फ़क़ीर की दृष्टि पड़े तो वह देख के बहुत
ललचाय फिर ज़र बफ़्त का दस्तर खान बिछवा उस पर ज
ड़ाऊ बासनों में मेवे मिठाई और भांति भांति के खाने की वस्तु
चुनी और गंगा जमुनी के आफ़ताबे चिलमची से हाथ धुल
वा बिनती की कि आप कुछ भोजन कर इस अपने दास को कृ
तार्थ करैं इस बात को सुन के उस छली क्षुद्र बुद्धि ने हाथ ब
ढ़ाया और उन्हीं अपने चालीसों साथियों के साथ भोजन
करने लगा दो चार कौर खाके कहा कि बस फ़क़ीर को पेट भ
र खाना अच्छा नहीं क्योंकि बहुत खाने से परमेश्वर का भ
जन स्मरण नहीं होता माहरू शाह ने कहा कि मेरा संतोष नहीं
होता कुछ और भी थोड़ा सा भोजन कीजिये उसने कहा कि इ
तना भी तुम्हारा मन रखने के लिये खाया मैं तो सारे दिन रा
त में दो चार दाने खाता और आठ पहर परमेश्वर के स्मरण
में रहता हूं क्योंकि जो बहुत भोजन करूं तो भजन स्मरण कैसे

हा सकै श्रौर मन में यह कहता था कि यह संपदा सबकी सब अ
पनी है कहां जायगी फिर जड़ाऊ अतर दान पान दान लाके आ
गे धरा उसने अतर मला श्रौर घड़ी दो घड़ी बैठ के बिदा हो अप
ने घर आके उन चालीसो चोरों से कहने लगा कि यह खाना तु
म्हारा तब सफल होगा कि हम तुम आजही की रात वह सब व
स्तु चुरा के अपने घर लावें इस बात चीत में रात होगई तब उ
सने चोरों के कपड़े पहिने श्रौर उन्हीं चालीसो को ले जाके आ
धी रात को उसकी हवेली की श्रोर चला माहरूअगह ने अपने
लोगों से पहिलेही कह रक्खा था कि तुम कुछ असबाब कहीं
से न समेटना जहां का तहीं पड़ा रहने देना श्रौर चैतन्य बैठे
रहना श्रौर एक रुक्का शहर के कोतवाल को लिख भेजा कि
आज की रात हमारे घर धर डांका पड़ने वाला है तुम थोड़े से
लोग लेके शीघ्र आश्रो श्रौर एक कोन में छिपे घात में रहो ज
ब इस हेवेली से पुकार हो उसी घड़ी तुम आन पहुंचना श्रौ
चोरों को बांध लेना कोतवाल इसके सुनते ही सौ दो सौ लोग
साथ ले उसकी हवेली के दाहिने बायें ठहर रहा कि इतने में
वह मरण हार एक चोरों की धार लिये उसकी हवेली में पैठा श्रौ
र सब वस्तु लूटने लगा एक एक ने एक एक वस्तु की गठरी बां
ध सिर पर रक्खी श्रौर वह फ़क़ीर भी जड़ाऊ मोर हाथ में ले
के हवेली से बाहेर निकला पियादे जो उसी ताक में लग रहे
थे अपनी अपनी जगह से कूदे श्रौर रूद पटकन सबों की
मुश्कें बांध लीं श्रौर गठरियां उन के गले में डाल दीं श्रौर इ
तनी पुकार हुई कि कोतवाल आप चला आया श्रौर कहा कि
अब आप भी उनसे चौकस रहैं प्रातःकाल बादशाह के साम
ने खिंचैंलंगे वहां से जो हुक्म होगा सो करैंगे हुस्न बानू उन चो
रियों को बंधा देख के बहुत प्रसन्न हो श्रौर अपने नौकरों को
इनाम दे ठंढे जी से पांव फैलाके सो रही इतने में प्रातःकाल

हुआ और बादशाह महल से निकल बादशाही तखत पर वि
राजमान हुये और वज़ीर अमीर मुजरा करके अपनी अपनी
जगह पर खड़े हुये बादशाह ने पूछा कि रात को शहर में क्या
हल्ला होरहा था इतने में कोतवाल उन सबों को बांधे हुये आ
पहुंचा और प्रणाम कर कहने लगा कि पृथ्वीनाथ आज आ
धी रात को वरज़ख सौदागर की हवेली में डाका पड़ा मैं उसी स
मय जा पहुंचा उन डकैतों को लूटी हुई सब वस्तु सहित बांध
के लाया हूं परंतु मुझ को ऐसा जान पड़ता है कि मैंने उनको क
हीं देखा है कुछ जान पहिचान देख पड़ते हैं वह यह कह र
हा था कि इतने में माहरू शाह आया और मुजरा कर एक जड़ा
ऊ कुरसी पर बैठगया बादशाह ने पूछा कि वेरा क्या आज रात
को तुम्हारी हवेली पर चोर आये थे उसने कहा कि पृथ्वीनाथ
कोतवाल अच्छे समय पर पहुंचा नहीं तो घर लुटता और
मैं मारा जाता यह सुन के बादशाह ने कहा कि उन चोरों को ह
मारे सामने लाओ वह वैसेही उनको बांधे हुये लाये बादशा
ह हंसे और कहने लगे कि बेरा ये तो हमारे शाह साहेब जान
पड़ते हैं उनको और समीप लाओ जब आगे आये और अच्छे
प्रकार पहिचाने गये तो वही शाह साहेब और वही चालीसों
मुरीद थे फिर कोतवाल को हुकमदिया कि तू उनकी गठरियां
और कमरें खोल के देखलाओ उसने उनका झाड़ा लिया तो एक
एक के पास फांसियां निकलीं और शाह साहेब के पास से भी
जड़ाऊ मोर और फांसीयां हाथ आईं बादशाह यह देख अ
चंभे में हुये और कोप से कहने लगे कि अभी इनको सूली दो
कि फिरि कोई ऐसा छल न करे वहां तो मुख से निकलने की
विलम्ब थी जल्लाद ने सबको सूली चढ़ा दिया हुस्न बानू ने ज
ब देखा कि बैरी अपने साथियों समेत मरा गया कुरसी पर से
उठी और हाथ जोड़ कहने लगी कि पृथ्वीनाथ यह लौंडी वर-

ख़ख सौदागर की बेटी है आपने इसी निर्लज्ज फ़क़ीर के लिये
मुझे देश निकाला दिया था तबभी मेरा कुछ अपराध न था मे
रे बाप का सब असबाब इसके घर में है जो उसका घर खोदा
जाय तौ निकले और लौंडी का रूठ सच खुल जाय बादशाह ने ब
डे सोच से अंगुलिया कार ने लगे और हुकम दिया कि उसका
घर खोदा जाय और हुस्न बानू को बहुत सराहा जब उसका
घर खोदा गया तब बरजख सौदागर का सब माल निकला
हुस्न बानू ने वह सब बादशाह के नज़र किया और बिनती
की कि पृथ्वी नाथ लौंडी को इस बात का अभिलाष है कि जो
आप के चरण मेरे घर में बिराजमान हों तो जो बहुत सी सं
पदा परमेश्वर ने मुझे दी है उसको दिखाऊं और अपना वृतांत
वर्णन करूं बादशाह ने उसका कहना अंगीकार किया वह बि
दा हो अपने शहर में आई और सब शहर को रचि कै महल
को भी बादशाहों के योग्य संवारा दो तीन दिन बीते बादशाह
उस शहर की ओर चले जब समीप आ पहुंचे तब वह अपनी
सिपाह सहित आगे लेने के लिये बड़े चमत्कार से शहर के
बाहर आई और चरण चूम बड़े चमत्कार से महल में लेग
ई और अति उत्तम राज्यासन पर बैठाला और दूसरा जड़ाऊ
मोर और धन रत्न के कई थाल आगे रक्खे बादशाह उसको
देख बहुत प्रसन्न हुये फिर उसने सातों कुए धन रत्न से परिपू
र्ण देखला दिये और हाथ जोड़ के बिनती की कि बादशाही से
वकों को हुकम हो कि इस संपदा को छकड़ों पर लदवा के बाद
शाही खज़ाने में पहुंचावैं बादशाह ने बज़ीरों से कहा कि तु
म इस माल को अभी सरकारी खज़ाने में भिजवादो वे लिख
ने वालो सहित कुओं पर गये देखते क्या हैं कि धन रत्नों से
भरे हैं जो चाहा कि उसको निकालैं वहीं वह बस्तु साप बिच्छू
हो गई वे इससे डरके बादशाह के पास गये और वह समाचार

कहा बादशाह सुन के अचंभे में और हुस्न बानू के चेहरे का रंग
पीला होगया तब बादशाह ने कहा कि बेटी कुछ चिंता मत क
र यह संपदा परमेश्वर ने तेरे ही भाग्य में लिखी है जो तू चाहे
सो कर इसको दूसरा कोई न ले सकेगा वह इस धीर्य की बातों
से प्रसन्न हुई और कहा कि जो आज्ञा हो तो इस असंख्य धन
को परमेश्वर हेत उठाऊं बादशाह ने आज्ञा दे और उस्से बिदा
हो राज महल में गये सिपाह के थोड़े लोग उसकी रक्षा के लि
ये वहां छोड़ दिये उसने उसी दिन से एक बड़ा मकान बनवाया
वहां जो कोई बिदेशी आता उसको खाना कपड़ा द्रव्य वस्त्र दे
बिदा करती जो कोई कहीं जाने का मनोर्थ करके आता उसको
उसके योग्य राह खर्च देती कुछ दिनों में बिदेशियों ने उस का
यह गुण देश देश शहर शहर गांव गांव में प्रसिद्ध किया कि
एक नये शहर में लड़की ऐसी उदारचित उपजी है कि मनु
ष्यों का मन बांछित मनोर्थ धन संपत्ति से परिपूर्ण कर देती
है और अपनी मीठी बोली से सबको अपना सेवक बना लेती
है सच तो यह है कि ऐसी न सुनी न देखी और उसके नौकर भी
ऐसे हैं कि दीन दुखी को रुपयों मोहरों से निहाल कर देते हैं उ
स का नाम उदारता और दयावानी में सूर्य चन्द्र से अधिक प्र
काशित है होते होते यह समाचार शहर खवारिज़्म में पहुंचा
वहां के बादशाह के पास सेना और राज्य और धन संपत्ति
बहुत थी उसके एक बेटा मुनीर शामी नामी चौदह पंद्रह वर्ष
का परम सुन्दर था उसने हुस्न बानू की उदारता और सुन्दर
ता सुनी सुनतेही उस पर आशक्त होगया और एक मुसौवर
को बुलाके कहा कि मैं इतने रुपये दूंगा तू शाहाबाद को जा औ
र हुस्न बानू की तसवीर जैसे बने वैसे खैंच ला वह कई मही
ने का वादा कर उससे बिदा हुआ और शाहाबाद में जापहुंचा
हुस्न बानू के कई नौकर इस काम के लिये थे कि बिदेशी को अ

पने मकान पर ले जाते और अच्छे अच्छे खाने खिलाते जब वह
जाया चाहता तब उसको हुस्नबानू के पास ले आते वह उसका
वृत्तांत पूछ के उसके योग्य द्रव्य दे बिदा करती थी वैसेही वे-
लोग उसको भी उसके पास लेगये तब उसने परदा डाल के
उसको अपने पास बुलाया और पूछा उसने कहा कि मुझे यह
अभिलाष है कि आपके चरण समीप अपना जीवन व्यती
त करूं उसने कहा कि तू क्या काम जानता है और तुझ में क्या
गुण है उसने कहा कि मैं मुसौव्वर हूं जिसकी तसवीर खींचा
चाहूं कपड़े की ओट में खींच लूं इस बात को सुन उसने उसे
नोकर रक्खा कुछ दिन बीते जी में यह आया कि अपनी तस
वीर खिचवाइये और देखिये कि वह सच्चा है वा झूठा एक दि
न उसे बुलवा के कहा कि मेरी तसवीर बिन देखे खींच उसने
कहा कि आप कोठे पर चढ़ें और एक लगन पानी से भर वा के
दीवार के नीचे रखवादें मै पानी में कुछ थोडी सी छाया दे
खलूं तो तुम्हारी तसवीर हूबहू खींचूं उसने हुकुम दिया कि
एक थाली पानी से भर के दीवार के तले रखदो नोकरों ने वै
साही किया तब ऊपर गई और उसकी परछांहीं पानी में पड़ी
मुसौव्वर नें पानी मे उसे देखलिया और अपने घर आके दो
तसवीरें खींची जो तसवीर हूबहू थी सो तो उसने अपने पा
स रक्खी और ऐसी वैसी हुस्नबानू को दी उसने उसको भी
प्रसन्न करके लेलिया और इनाम देके बिदा किया वह मुसौ
व्वर थोड़े दिनो में मुनीर शामी के पास आ पहुंचा और वह त
सवीर उसको दी तसवीर के देखतही उसको मूर्छा आगई
जब चेत हुआ तब ठंढी सांसे लेने लगा सहसा यह बात जी में
ठहराई कि यहां से निकल चलना भला है यद्यपि मा बाप की
इच्छा नहीं निदान आधी रात को भिखारी का वेष बना घर से
अकेला निकल शाहाबाद की और चला बहुत दिनों में केश

सहता आपदा उठाता उस शहर में आ पहुंचा पर कुछ खाय
नहीं विदेशियों के आदर करने वाले नौकरों ने यह समाचा
र हुस्न बानू को पहुंचाया कि एक विदेशी इस शहर में ऐसा
आया है कि न कुछ खाता है न किसी से बोलता है हुस्न बानू
ने उसको अपने पास बुलवा लिया और कहा कि तूने खाना।
पीना क्यों छोड़ा और इतना धन क्यों न लिया जो लेता तो कहीं
न कहीं तेरे काम आही रहता भला कुछ तो हम से ले उसने क
हा कि धन रत्न की चाह से नहीं आया मेरे पास भी बहुत धन
संपदा है खवारज़्म का बादशाहज़ादा हूं उसने कहा जो तू बा
दशाहज़ादा है तौ भिखारी क्यों हुआ वह बोला कि मै तेरी त
सबीर देख बावला हो अपनी शहज़ादगी मिट्टी में मिला
शहर से निकल धूर छानता यहां तक आ पहुंचा केवल तेरे
मिलने का अभिलाष है जो बात सच थी सो कही आगे जो तेरी
इच्छा हो सो कर इस बात को सुन हुस्न बानू ने सिर झुका लि
या थोडी बिलम्ब में बोली कि तू इस अभिलाष को अपने म
न से दूर कर क्योंकि जो धूर होय बन के साथ उड़ता फिरेगा
तो भी मेरे एक बाल तक न पहुंचेगा मुंह देखने की तो कौन
चरचा है परंतु वह मनुष्य जो मेरी सातो बातें पूरी करे तब
शाहज़ादा बोला कि मैं अपने प्राण तेरे द्वारे पर दूंगा वह मु
सकरा के बोली कि प्राण देना थोड़ी बात है पर मेरा मुंह देखन
बहुत कठिन है तब उसने कहा कि तुमको अपने प्यारे प्राण
की सौगंद है वे कौन सी बातें हैं मुझ से कहो तब हुस्न बानू
बोली कि पहिला सवाल तो यह है कि एक बेर देखा दूसरी
बेर देखने का अभिलाष है इसका उत्तर दे उसने कहा कि
वह कहां है और किस्से यह बात कहता है यह सुन वह हंसी
और कहने लगी कि जो मै जानती तो तुझ से क्यों पूछती शाह
ज़ादा सुन के सिर झुका के चलागया और आप में कहने लगा

कि अब क्या करूं बिन देखी हुई जगह क्योंकर जाओं
तब हुस्नबानू बोली कि जो यही डर है तौ मेरे देखने की चाह म
न से दूर कर और जहां चाहै वहां चला जा फिर उसने कहा कि
हे परम सुन्दरी मेरे लिये तेरे शहर ही का रहना अच्छा है और
यहीं की गलियों का मरना भला यह सुन के उसने कहा कि हम
ऐसे बकने वाले को अपने शहर में रहने नहीं देते जो आपसे
जाता है तौ जा नहीं तौ दुर्दशा से निकलेगा शहज़ादा इन बा
तों से निरास हुआ और एक बर्ष की अबधि कर चलने का मनो
र्थ किया तब एक सौदागर बच्चे ने जाना कि यह अपने
प्राण यहां खो चुका है थोड़े बहुत रुपये राह खर्च दिये और ना
म पूछा उसने कहा मुनीर शामी एक बार ही रोता पीटता जं
गल की ओर चला किसी जंगल में जाके हंस देता और किसी प
हाड़ से सिर टकरा के रो देता पर पैर बढ़ाता ही जाता था उस नि
र्दयी कठोर चित्त के यहां ऐसे ही कितने शहज़ादे वज़ीरज़ादे
आये और सातौ बातों में फंस फंस के कितने चले गये और
बहुतेरे मर मिटे पर उसकी एक बात भी कोई पूरी न कर सका
पर मुनीर शामी उसकी तसवीर गले में डाले हुये जंगल जंग
ल बगूला सा फिरता था पर कहीं अपने मनोर्थ का खोज नहीं
पाता फिरते फिरते एक दिन यमन के समीप एक जंगल में जा
निकला और किसी वृक्ष के नीचे बैठ के मेघ के समान आंखों
से आंसू की धारा बहाने लगा हातिम भी उस दिन वहीं आखे
ट को गया था इतने मे एक दुःख भरा शब्द उसके कान में पड़ा
उसने अपने लोगों से कहा कि इस पुकार के समाचार ला
ओ देखो ऐसा कौन दुखी है जो ऐसा फूट फूट रोता है कई
मनुष्य गये और आके कहा कि एक मनुष्य तरुण और पर
म रूपवान भिखारी सा उस वृक्ष के नीचे बैठा रोता है न आं
ख खोलता है न बोलता है हातिम इस बात के सुनते ही अ

केला उसके पास आके चुपका खड़ा हो रहा और दूरसे तमा
शा देखने लगा वह बे सुध रो रो के कराहता और अपने कलेजे
के टुकड़े करता था हातिम उसकी यह दशा देखते ही आंखें
में आंसू भरलाया और घबराउठा और अपने जी मे कहने
लगा कि हे परमेश्वर इस पर ऐसा क्या दुख पड़ा है जो इस
की ऐसी दशा होगई निदान अपने घोड़े से उतर उसके सर
हाने जा खड़ा हुआ और बड़ी कृपा से पूछने लगा कि मित्र तु
झ पर क्या ऐसी आपदा पड़ी जो तेरी यह दशा है उसने सिर
उठा के देखा कि एक मनुष्य परम सुन्दर बादशाहों की ऐसी
पोशाक पहिने मेरा वृतांत पूछता है जब उसने इस दया कृ
पा संयुक्त उसे देखा तो सहसा बोल उठा कि भाई क्या कहूं कि
न कहि सकता न लिख सकता हूं कोई ऐसा नहीं देख पड़ता
कि मेरे मन की पीर सुनै और उसकी औषधि करै हातिम ने
कहा कि तू धीर्य रख और अपना दुःख मुझ से कह क्योंकि मै
ने परमेश्वर हेत परोपकार की प्रतिज्ञा की है तेरे भी काम
करने में अपने बश भर निः छल परिश्रम करूंगा जो धन सं
पत्ति चाहिये तो अभी ले और जो किसी बैरी ने सताया है।
तो उसको मेरे सामने कर उसको मारूंगा वा आप मरजाऊं
गा और जो कान्ता के मिलने का अभिलाष है तो वह बे परि
श्रम नहीं मिल सकती उसका भी उपाय करूंगा ईश्वर की
कृपा से उसको भी तुझे मिला दूंगा जो नर चाहिये तो यह
भी तेरे आगे है मुनीर शामी ने जो इस ढब की बातें सुनी तो
धन्य धन्य कहिके आशिष दे कहा कि हे परोपकारी तू सदा
जीता रहे जो मुझ दीन दुखी को धीर्य देता है यह कह के वह त
सबीर बग़ल से निकाली और उसे देखा के पूछा कि अब तू
ही बता कि इसके बिन देखे कैसे जियूं और अपनी बुरी दसा
क्यों न करौं हातिम ने जो वह तसबीर देखी तो भौचक रहगया

फिरि कहने लगा कि तेरी बात सब सच्ची है पर इतना मत घब
रा कुछ थोड़ा धीर्य कर और निश्चय रख परमेश्वर से ध्यान।
लगा मैं भी तेरे काम में पूरा परिश्रम करूंगा जब तक तेरी।
प्यारी तुझ से नहीं मिलती तब तक तेरा साथ नहीं छोडता
निदान ऐसा धीर्य दे और ढाढ़स बंधाय मन मे लेगया वहां
नहला धुला कपड़े बदलवाये खाना खिला नाच देखा दो चा
र दिन इस भांति बहला था फिर एक दिन उसे उदास देखके
कहा कि मैं तुझे टालता नहीं अब तेरे काम को ढूंढता हूं औ
र परिश्रम की फैंट बांधता हूं शाहज़ादा बोला कि मेरे काम
की आदि अंत नहीं मै नही चाहता कि तू अपना सुख चैन छो
ड़े और दुःख क्लेश में पड़े हातिम बोला यद्यपि तू नहीं चा
हता तो न चाह परंतु मैं अपनी बात को अपने बशभर निबा
हूंगा जो जीता बचा तो तुझे तेरी प्यारी से मिला दूंगा निदान
अपने काम काजियों को इकट्ठा करके कहा कि जैसे बिदे
शियों की जगह और भूखों को खाना नंगों को कपड़ा कंगालों
को रुपया मेरे सामने मिलता है वैसाही मेरे आने तक मिल
जाय यह कोई न कहै कि हातिम इस शहर मे नहीं अब कौन
किसी को दे इस काम में सिथलता न करना अच्छे प्रकार
किये जाना इस भांति उन को समझा बुझा दिया और आप
मुनीर शामी के साथ शाहाबाद का रास्ता लिया कितने दिनों
में वहां जा पहुंचा हुस्न बानू के लोग जो बिदेशियों के आदर
सन्मान के लिये नियत थे आगे बढ के उन को बिदेशी स्थान
में लेगये भान्ति भांति के खाने और रुपये अशरफ़ी बहुत
सी आगे धरी और हाथ जोड़ बिनती कर कहने लगे कि
आप बिन संकोच खाना खाइये और अरुण स्वेत द्रव्य।
जितनी चाहिये निःसंदेह लीजिये उसने कहा कि मैं रोटी क
पड़े धन रत्न संपत्ति का दुखी होके नहीं आया परमेश्वर से मु

र को भी सब कुछ बहुत सा दिया और देशों का राजा किया है मेरा तो बहुत बड़ा अभिलाष है लोगों ने इस बात को सुन के हुस्न बानू से जा कहा कि एक मनुष्य हातिम नामी तुम्हारी बातें पूरी करने के लिये शहर में आया है और मुनीर शामी उसके साथ है उसने यह सुन के उन दोनो को बुलवालिया जब वे आये तब चिलमन की ओट मे हो बैठी और पूछने ल गी कि तुम्हारा क्या वृतांत है हातिम ने कहा जीते तो हैं परंतु हे चन्द्र मुखी टुक उसको मुंह देखा जो तेरे लिये अपना रा ज पाट छोड़ भिखारी का भेष बना बावला हो दिन रात रोता पीटता मारा मारा फिरता है जिसमें उसके जी को कुछ भी तो धीर्य होजावे और जीवन का फल पावे वह बोली कि मैं बे प हिचान मनुष्य के सामने कैसे आऊं और किस भांति अप ना मुंह दिखाऊं पर जो कोई मेरी ये सातो बातों का समा चार लावेगा वही मेरे साथ विवाह कर मेरे दरशन की फुल वारी से आनंद के फूल चुनेगा और मेरे मिलाप समागम की मद्यपान करेगा हातिम ने कहा कि वे कौन सी बातें हैं तुम अपनी मधुर जिव्हा से बरणन करो और उसके साथ यह बचन भी दो कि जो उन बातों को पूरा करूं तो तुम को जिसे चा हूं दे दूं उसने इस बात को मान के दृढ़ प्रतिज्ञा की फिर भां ति भांति के खाने खिलवा के धन रत्न दे विदा के समय कहा कि हे हातिम एक बात तो यह है कि एक बेर देखा दूसरी बे र देखने का अभिलाष है उसके समाचार ला वह कौन है और कहां है और उसने ऐसा क्या देखा है कि दूसरी बेर दे खने का अभिलाष करता है पहिले इसको पूरा कर फिर दूसरी बात का उपाय कीजे हातिम ने इस बात को सुनते ही मुनीर शामी को उसे सौंप के कहा कि यह मेरा भाई है जब तक मैं यहां न आऊं तब तक उस को यहां रखना और उसे

हेत बनाये रहना उदासन होने पावै यह कह हातिम वहां से बिदा हुआ और मुनीर शामी को वहां छोड़ धीर्य दे एक ओर चलदिया

पहिली कहानी हातिम के जाने और पहिली बात पूरी करने की

निदान हातिम जब थोड़ी दूर गया तब अपने जी में कहने लगा कि अब मैं क्या करूं और किस्से कहूं बे देखे सुने किधर जावं और यह कठिन गांठ कैसे खोलूं परंतु मैंने तो परमेश्वर हेत पराये लिये यह परिश्रम अपने ऊपर लिया है वही परमेश्वर सब पूरा डालेगा मुझ से तो कुछ नहीं हो सकता यह कह परमेश्वर के आसरा भरोसा कर आगे बढ़ा इतने में क्या देखता है कि एक भेड़िया चाहता है कि हिरनी को पकड़ के चीर फाड़ खाजाय जो उसने देखा दौड़ के भय भरे शब्द से पुकार के कहा कि अरे दुष्ट क्या करता है सभल जा यह बिचारी बच्चे वाली है उसके थनों से दूध टपक रहा है वह इस बात को सुन के डरा और खड़ा हो के कहने लगा कि तू क्या हातिम है जो ऐसे समय उसके आड़े आया वह बोला तूने क्यों कर जाना उसने कहा मैंने तेरे साहस और दया से पहिचाना कि सारे संसार मे यह बिदित है कि तू सब प्राणियों पर दया करता है पर यह कारण नहीं जान पड़ता कि तूने मेरा अहार मेरे मुंह से क्यों छुड़ाया तब हातिम ने कहा कि तू क्या चाहता है वह बोला कि मेरा अहार मान्स है जो पाऊं तो खाऊं हातिम ने कहा कि अच्छा जहां का मान्स चाहे वहां का मेरे शरीर से काट कर खा और अपना पेट भर जहां चाहे वहां चला जा उसने कहा कि चूतर का मान्स बे हड्डी होता है जो वह दे तो बहुत सा अच्छा चक्खौं और तुझ को असीस दूं तब हातिम ने उसी घड़ी अपनी छुरी निकाल और एक लोथड़ा चूतर से काटके

उसके आगे डालदिया वह मांस उसने खाया और तब हो
के कहा कि हातिम ऐसी क्या आपदा पड़ी कि तूने यमन ऐ
से शहर को छोड़ा और इतना क्लेश सह के इस भयानक
बन में आपड़ा तब हातिम ने कहा कि मुनीरशामी हुस्न
बानूं पर आशक्त हुआ है और उसकी सात बातें हैं जो को
ई उनको पूरी करेगा उसके साथ ब्याह करेगी मैंने परमेश्व
र हेत इस काम का बोझ अपने सिर पर उठाता है एक बात
उसकी यह है कि एक मनुष्य यह कहता है कि एक बेर देखा
दूसरी बेर देखने का अभिलाष है यद्यपि मैं नहीं जानता कि
वह जगह कहां है और वह कौन है और उसने ऐसा क्या
देखा है जिसके दूसरी बेर देखने का अभिलाष करता है पर
परमेश्वर की ओर लौ लगाये बन बन चला जाता हूं कहीं
तो उसका खोज मिलेगा इस बात को सुन के भेड़िये ने कहा
कि मैं उस जगह को जानता हूं बहुधा बूढ़ों के मुंह से सुनाय
या है उसका नाम दश्तहवैदा है जो वहां जाता है सो दिन भर
फिरता है और यही सुनता है हातिम ने कहा वह जगह क
हां है भेड़िया बोला कि यहां से थोड़ी दूर चलके दो रस्ते मिलें
गे तू बायें हाथ का रस्ता छोड़ दाहिने रस्ते होलेना निश्चय है
कि वहीं पहुंचेगा और अपना मनोर्थ पूरा करेगा हिरनी
उसको असीस देती चली और भेड़िया भी उससे बिदा हु
आ पर वे दोनों उसकी वीरता और उदारता पर धन्य ध-
न्य कहते थे हातिम दो ही चार पैग चला था कि पीर के मा
र उसके पैर लड़खड़ाये और एक वृक्ष के नीचे गिर के तल
फने लगा वहां एक गीदड़ की भाठी थी और वह अपनी गी
दड़ी समेत अहार के लिये गया था दो चार घड़ी पीछे लौट
ह चुग के आया और हातिम को अपनी जगह पर तड़पते
देखा तब गीदड़ी ने उससे कहा कि यह मनुष्य कहां से आया

है अब इस जगह को छोड़ दिया चाहिये क्योंकि मनुष्य और
पशु का निबाह कैसे हो सकता है गीदड़ ने कहा कि यह सुरू
पवान पुरुष हातिम है और दश्तह बैदा के समाचार लेने
जाता है अब चूतड की पीर के मारे इस वृक्ष के नीचे गिर प
ड़ा है वह बोली तूने क्योंकर जाना उसने कहा कि मैंने अपने
बूढ़ों के मुंह से सुना है कि उस तिथि वार को हातिम यहां आ
वेगा और इस वृक्ष के नीचे क्लेश सहैगा सो वह तिथि वार आ
ज है उसने कहा इसका वृत्तांत सच कह उसने कहा यह यमन
का बादशाह ज़ादा बड़ा दाता है आज एक बच्चे वाली हिरनी
वन में चरती फिरती थी एक भेड़िया उस पर लपका उस भेड़ि
ये से वह हिरनी छुटा दी और क्लेश सहा उसने कहा कि मनुष्यों
में कहीं ऐसे दयावान लोग होते हैं और कब किसी पशु पर
कृपा करते हैं उसने कहा कि यह क्या कहती है मनुष्य सब जी
वों से उत्तम है सब सृष्टि में उत्तम कहलाता है हातिम तो ब
ड़ा उदार और बड़ा सुशील और गुणाढ्य है और ऐसा दाता है
कि अपना मान्स देके दूसरे के प्राण बचावे गीदड़ी ने जो उस
की भलाइयां इतनी सुनी तो कहा कि ऐसे क्लेश में कैसे इतनी
दूर जायगा गीदड़ बोला कि जो परी रू के सिर का भेजा इसके
घाव पर लगे तो बात कहते ही अच्छा होजाय पर यह बहुत
कठिन है इसलिये कि माज़िंदरां के वन में वह एक जीव है कि
उसकी देह मोर के समान है और सिर मनुष्य का ऐसा जो को
ई उसके पास जाता है और शरबत पिलाता है तो वह मस्त हो
के नाचने लगता है और तमाशे दिखाता है कोई मनुष्य स्त्री
के समान उस्से संग करते हैं यह सुन के गीदड़ी बोली कि ऐसा
कौन है जो उसका सिर काट लावे और हातिम को अच्छा करे
उसने कहा जो तू सात दिन न दिन को दिन न रात को रात सम
के न कुछ खाय न पानी पिये और आठो पहर उसकी सुधि

लिये रहे तो में जाओं और उसका सिर काट लाओं उसने कहा
कि इस्से क्या भला है कि मनुष्य का उपकार पशु से हो निदान
वह उन दोनो को यहीं छोड गया जब वह माजिंदरां के बन में प
हुंचा तब परीरू उसको किसी वृक्ष के नीचे सोते पाया पास जाके उस
का सिर पकड़ ऐसा खींचा कि धड़से सिर अलग होगया तब उस
को ले अपने कहने के समय आ पहुंचा वह गीदड़ीभी उसीप्रकार
हातिम की रखवारी में बैठी रही उसके आने तक उसने चि
ड़िया के बच्चे कोभी हातिम के पास आने न दिया रात दिन उस
के सरहाने बैठे जागा की हातिम भी पडे पडे उसके श्रम और
दया को देखा करता था गीदड़ ने परीरू का सिर लाके गीदड़ी
को दिया उसने सिर को तोड उसका भेजा हातिम के घृ नर पर
लगाया वह घाव तुरत भर आया और पीर जाती रही और हा
तिम उठ खड़ा हुआ और उसकी ओर दौड़ के कहने लगा कि
हे पशु तूने मेरा बड़ा उपकार किया पर अच्छा न किया कि मेरे
लिये एक जीव के प्राण लिये इसका पाप मुझ को होगा मैं परमे
श्वर को क्या मुंह दिखाओंगा इस बात को सुन के उसने कहा।
कि यह पाप मेरे सिर पर है तू कुछ चिंता न कर क्योंकि हम भी
अपने करता को जानते हैं यह कह रहा था कि इतने में हाति
म ने कहा कि जो तुमने मेरा उपकार किया है तो मुझ से भी कु
छ कहो कि मैं भी तुम्हारा काम करों गीदड बोला कि हे वीर इ
स जंगल के समीप कफ़तार रहते हैं और हमारे बच्चे खाजा
ते हैं हमारा इतना भी बश नहीं चलता कि उन को मार के अप
ने बच्चे बचावैं जो उन को तू मारे और हमारे सिर से यह उत
पात टाले तो बड़ा उपकार करै और हम को बिन दामों मोल
ले हातिम ने कहा कि तुम मुझ को उनकी जगह बताओ अप
ने बश भर तुम्हारा काम करूंगा वह जंगल वहां से छः कोस
पर था वह हातिम को ले के गया और वह जगह देखा के आप

किसी झाड़ी में छिप रहा हातिम आगे गया और जगह को सूनी पा के बैठा कि इतने में एक जोड़ा आया तो क्या देखता है कि ए क मनुष्य हमारी जगह में बैठा है यह देख वे दोनों आगे बढ़े और कहने लगे कि अरे यह जगह तेरी नहीं है जो तू महा पा ना पति होके आ बैठा जो अपना भला चाहता है तो उलटे पां ओं फिर जा नहीं तो अभी तक्का बूटी करलेते हैं हातिम ने क हा कि हे मूर्ख मैं जीवों का दुख दाई नहीं और न बहेलिया हूं तु म मुझ से इतना क्यों डरते हो जो तुम्हारी जगह है तो तुम्हें सो हती रहे सुख चैन करो उसने कहा कि मनुष्य में शील कहां तू हम से छल न कर चला जा नहीं तो दुख पावेगा और मा रा जायगा हातिम ने कहा कि अरे पशु परमेश्वर के लिये जै से अपने प्राण मानते हो वैसे दूसरे के भी जानो यह क्या अ न्याय है कि गीदड़ के बच्चे मार के अपना पालन करो वह बो ला क्या तू गीदड़ का हिमायती होके हम से लड़ने आया है हा तिम ने कहा कि परमेश्वर की सौगंद है मैं उनका हिमायती बन के नहीं आया केवल बिनती करता हूं कि तुम उसके ब च्चे खाना छोड़ दो और परमेश्वर से डरो वह बोला कि अरे म नुष्य तू उनका सोच क्या करता है कोई क्षण में तेरी भी वही दसा होनी है इस बात को सुन के हातिम ने कहा कि बच्चों के बदले मुझे खा पर उन बच्चों का खाना छोड़ दे वह बोला उन को तो खावेंगे पर आज तुझ को भी न छोड़ेंगे हातिम ने फिर कहा कि तुम को उस परमेश्वर की सौगंद है जिसने चौरासी लाख प्रकार के जीव उत्पन्न किये हैं तुम गीदड़ के बच्चों का खाना छोड़ दो वह परमेश्वर परम कृपाल है सब को अहार देता है किसी न किसी प्रकार से तुम को अहार पहुं चावेगा वह बोला उनको कब छोड़ते हैं और तुझे कब जीता जाने देते हैं तब हातिम ने जाना कि ये दुष्ट कठोर हैं परमेश्वर

की भी सौगंद नहीं मानते इनको मारना चाहिये यह समझ
वह क्रोध से लाल होगया और उछल के इन दोनो को गला
पकड़ धरती पर दे पटका और जी में कहा कि मैं इनको कैसे
मारूं क्योंकि मैंने आज तक न किसी को मारा है न किसी को दु
ख दिया है पर उन्होंने परमेश्वर की सौगंद न मानी कुछ दं
ड देना चाहिये इस बात को जी में ठहरा छुरी निकाल मुंह में
उन के दांत तोड़े और फल से नाक काटे फिर परमेश्वर की
स्तुति दंडवत कर यह मांगा कि हे परमेश्वर इन पशुओं की
पीर दूर कर उसकी यह प्रार्थना परमेश्वर ने मान ली उसी
घड़ी उन दोनो की पीर जाती रही फिर उसने उनको छोड़ दिया
तो दोनो के कहने लगे कि अब हम को आहार कैसे मिलेगा औ
र हम क्योंकर जियेंगे हातिम ने कहा कि कुछ चिंता मत करो
परमेश्वर सब का पालन करता है वह किसी ढब से तुम को
आहार पहुंचावेगा इतने में वह गीदड़ सामने से आके क
हने लगा कि आप चिंता न करैं आज से इनका खाना पीना
मेरे सिर हुआ हम जब तक जीते रहेंगे तब तक जहां से हो
गा लाके इन्हें खिलावैंगे यह बात सुन के हातिम उनसे बि
दा हो आगे बढ़ा इतने मे गीदड़ी ने गीदड़ से कहा कि यह
उचित नहीं कि हातिम दश्तहवैदा को अकेला जाय और तू
उस का साथ न दे इस बात के सुनते ही वह दौड़ा और पुका
र के कहने लगा कि हातिम मैं भी तेरे साथ दश्तहवैदा को
चलूंगा उसने कहा हे पशु मैं तेरे एक उपकार से सिर नहीं
उठा सकता दूसरा बोझ क्योंकर लूं और अपने लिये तुझे
तेरे घर से बाहर लेजाओं परमेश्वर के लिये इन बातों को
छोड़ यह मुझसे कभी न होसकेगा जो तू साथ देने ही पर
मरता है तो यही बड़ा उपकार है कि मुझे सीधा रास्ता ब
ता दे उसने कहा कि जो रास्ता शीघ्र पहुंचने का है उसमें -

बड़ा क्लेश है दूसरा रस्ता बहुत दिनों में पहुंचने का है परंतु इसमें इतना खटका नहीं मैं इस लिये तेरे साथ चला चाहता हूं कि उनको बता दूं आगे तेरी इच्छा उसने कहा कि परमेश्वर शीघ्र पहुंचने के रस्ते के क्लेश मुरू को सुखदायक करेगा तब गीदड़ ने कहा कि जो रस्ता तेरे आगे आता है वही शीघ्र पहुंचने का है जो जीता बचेगा तो दशनई वर्ष में पहुंचेगा हातिम उस को बिदा करके चला बहुत दिनों में एक चौराहा दिखाई दिया यह वहां खड़ा हो सोचने लगा कि अब किधर जाओं इस बन में रीछ राज करता है सब रीछ ही रीछ हैं इतने में सौ दो सौ रीछ चलने फिरने वहां आये थे हातिम को देखतेही बहुत प्रसन्न हुये और पकड़ के अपने राजा के पास लेगये वह देख के बहुत प्रसन्न हो कहने लगा कि तुम हमारे पास बैठो और अपना वृत्तांत कहो तुम कौन हो और कहां से आये हो और तुम्हारा नाम क्या है मुझे तो यूं जान पड़ता है कि तुम यमन के बादशाह हातिम हो यह बात सुन के हातिम ने कहा कि यह तो तुम सच कहते हो कि मैं तैना का बेटा हातिम हूं परमेश्वर के हेत इस बन में आ निकला हूं उसने कहा कि मैं तो तुम्हारे आने से बहुत प्रसन्न हुआ जो तुम यहां आये हो तो मैं अपनी बेटी तुम्हें ब्याह दूंगा क्योंकि इस बन में मेरे दामाद होने योग्य कोई न था परंतु तुम आये हो इस बात को सुन उसने अपना सिर झुका लिया और सोचने लगा राजा ने कहा कि जो तू उत्तर नहीं देता तो जान पड़ता है कि मैं तेरे ससुर होने के योग्य नहीं हूं तब उसने कहा कि मैं मनुष्य और तू पशु मेरा तेरा संबंध कैसे हो वह बोला कि हातिम स्त्री संग का आनंद मनुष्य और पशु में एक सा है तू कुछ चिंता मत कर मेरी बेटी तुझी मीहै यह कहके दो-

चार रीछों से कहा कि तुम लड़की को ब्याह के गहने कपड़े
से संवार दुल्हिन बना उस मकान में बैठालो उस लड़की
को बना संवार के उस मकान मे ले गये फिर हातिम को
भी वहां लाये उसने जो उस परम सुन्दरी चन्द्र मुखी को दे
खा तो अचंभे में हो सभा मे फिर आया और कहने लगा
कि हे रीछ तू राजा और मैं भिखारी जो इस राज कुमारी को
अपनी जोरू करौं तो उचित नहीं उसने कहा तू इस बात
को मान ले और आगा पीछा छोड़ दे कि तुम भी यमन शह
र के बादशाह ज़ादे हो वह सोच कर जी मे कहने लगा कि
मैं किस आपदा में पड़ा अब मैं क्या करूं एक काम के लि
ये अपने शहर से निकला हूं जो यहां ब्याह करके रैन चैन
मनाऔंगा तो वहां मुनीर शामी मेरी बाट देख मर जायगा
परमेश्वर को क्या उत्तर दूंगा रीछों के राजा ने जो उसको फि
र सोच में देखा तो कहा कि जो तू इस बात को न मानेगा तो
कभी न छूटेगा ऐसे ही बंधे बंधे मर जायगा वह यह बात
भी सुन के न बोला न सिर उठा के देखा तब रीछ राज ने क्रो
ध कर अपनी ज़ाति वालों से कहा कि इसको उस गडहे में
डाल दो और एक पत्थर की सिला उसके मुंह पर रख दो
और चौकस रहो इस बात के सुनते ही कितने एक दौड़े
और हातिम को उस अंधेरे गडहे में बंद कर उसके मुंह
पर भारी सा पत्थर धर दिया वह उस गडहे में भूखा प्या
सा दुखी था सात दिन में रीछ राजा ने उसे बुलवा के अपने
पास बैठाला और समझा बुझा के कहा कि हातिम मेरी बे
टी को अंगीकार कर वह फिर भी सिर झुकाये रहा और उस
बात को मन में न लाया तब उसने मेवा का एक थाल उस
के आगे धरा वह भूखा तो था ही सहसा खाने लगा जब उ
सका पेट भरा तब उसने कहा कि उस परम सुन्दरी के सा

थ ब्याह कर और जीवन का आनंद ले हातिम ने कहा कि
भुरु से कभी न होसकेगा मनुष्य का पशु से क्या मेल उस
ने फिर रीछों से कहा कि उसी गडहे में डाल दो उन्होंने वैसा
ही किया यह कई दिन उस गडहे में वे अन्न जल रहा एक
दिन रात को वह अध मरा स्वप्न मे क्या देखता है कि एक बू
ढा मनुष्य सरहाने खडे कहता है कि हातिम तू इस अंधे
रे गडहे में क्यूं अपना प्राण वृथा खोता है और नहीं जान
ता कि तू किस काम के लिये आया है जब तक इस लडकी
को अंगीकार न करेगा तब तक यहांसे छूटेगा इस बात को सुन
उसने कहा कि जो में उसकी लडकी से अपना ब्याह करूंगा तो
वह कब मुझे अवकाश देगी जो मैं उस काम में जी लगाऊंगा
उसने कहा कि हातिम तेरा छुटकारा इसी में है बेधडक कर
ले नहीं तो तू इसी में मरजायगा तुझ को उचित है कि उसकी
बेटी को प्रसन्न कर वही तुझ को बिदा दलवा देगी यह स्वप्न
देखतेही वह चौंक पडा इतने में फिर रीछ राज ने उसको अ
पने पास बुलवाया और कहा कि हातिम तेरे लिये यही भला
है कि मेरी बेटी के साथ ब्याह कर उसने विवश हो इस बात
पर ब्याह करना माना कि जब से मे उसके साथ ब्याह करूं
तब से मेरे घर में कोई रीछ न आवे उसने कहा कि किसी री
छ की क्या मजाल जो वहां का ध्यान करे आना तो बहुत दूर है
निदान उसने अपने कुटुम्बियों और मंत्रियों और सेवकों
सिपाहियों को इकट्ठे कर ब्याह की सभा जमाई और हातिम
को राज्य आसन पर बिठा के अपनी कुल की रीति से उस ल
डकी का ब्याह हातिम के साथ करदिया और उसका हाथ
उसके हाथ में पकडा के आप उस चित्र सारी से बाहर नि
कल आया और हातिम ने उस ब्याह के पलंग पर सुखचै
न से आनंद किया ऐसेही उस परम सुन्दरी चंद्र मुखी के

के साथ रहा करना और भांति भांति के मेवे खाता निदान य
हां तक मेवे खाये कि जी घबरा उठा तब उखता के एक दिन अ
पने ससुर के पास गया और कहने लगा कि महाराज मैं मे
वे खाते खाते घबराया हूं जो कुछ अनाज मिले तो जी भरै
और मन लगे उसने उसी समय अपने रीछों को बुलवा के
कहा कि तुम सब भांति का अनाज और घी चीनी आदिक औ
र बासन गांवों और शहरों से ले आओ वे इस बात के सुन
ते ही दौड़े और शहरों से बासन और मनुष्यों के भोजन योग्य
सब उत्तम उत्तम वस्तु ले आये हातिम ने भांति भांति के खा
ने पकवाये और अपनी स्त्री के साथ बैठ के खाये जब इसी प्र
कार खाते और आनंद करते तीन महीने बीते तब उसने एक
दिन अत्यंत प्यार समय अपनी स्त्री से कहा कि जानी मैं अप
ने शहर से एक काम के लिये निकला था तेरे बाप ने मेरा ब्या
ह तेरे साथ कर दिया जो तू प्रसन्नता पूर्वक कुछ दिन के लिये
अपने बाप से मुझ को बिदा दिलवादे तो मेरे ऊपर बड़ी दया
करै जो मैं उस काम से छुटकारा पाऊंगा और जीता रहूंगा
तो फिर तुझसे आमिलूंगा वह इस बात के सुनते ही अपने
बाप के पास गई और कहने लगी कि बाबाजान ये ऐसी
बात कहते हैं उसने कहा कि जो तू इस बात में प्रसन्न है तो
तू उसी की स्त्री और वह तेरा पति है वह जाने और तू जाने
वह बोली कि वह बड़ा सत्यवादी जान पड़ता है अपने कह
ने पर अवश्य आवैगा कुछ संदेह नहीं आज्ञा दो उसने बुलवा
के बिदा किया और बहुत से रीछों को साथ कर कहि दिया कि
तुम कुशल क्षेम से हमारी राज्य के बाहिर तक पहुंचा दो त
ब उसकी बेटी ने एक मोहरा हातिम की पगड़ी में बांध दिया
कि बहुत जगह यह तेरे काम आवैगा निदान वह उन दोनों
बाप बेटी से बिदा होके आगे चला कुछ दिन में एक जंगल की ध

रती पर जा पड़ा जहां न दाना न पानी परंतु सांझ समय एक
वृद्ध पुरुष वस्त्र मुंह पर डाले रोटी और एक करोवा पानी ले जाता
वह उसे खा पी लेता और रात दिन चला जाता एक दिन एक
अजगर परवत समान देख पड़ा उसको देख के घबराया
पर चलने से न रुका ज्यों हीं उसके पास पहुंचा त्यों हीं उस
ने सांस खींची हातिम ने आप को बहुत संभाला पर न सं
भला उसके मुंह मे चला गया जब आप को उसके पेट मे
देखा तब परमेश्वर का धन्य बाद करके कहा कि भला हु
आ जो मेरा यह पाप भरा देह एक परमेश्वर के जीव के मु
ह मे पड़ा नहीं तो मिट्टी का शरीर किसी काम का न था स
च तो यह है कि जो कोई आपको परमेश्वर के मार्ग मे डा
लके और अपना घर बिगाड़ उसके स्मरण में रहता है तो
वह बिगड़ता नहीं परंतु उसकी परीक्षा के लिये पहिले कु
छ कुछ क्लेश देता है जो वह उस क्लेश मे बचा और दृढ़ रहा
तो परिश्रम के समुद्र से सुख का मोती ले निकला ऐसे ही
अपने मन को धीर्य देता था और अगले महात्माओं की
आपदा को ध्यान में लाता था कि परमेश्वर बड़ा कृपाल
है मेरा दुःख भी दूर करैगा इसी विचार में तीन दिन तक
उसके पेट मे फिरा और इधर उधर रस्ता तो कहीं न पा
या पर उस अजगर का बिष उसको न व्यापा उस का यह
कारण था कि चलते समय उसकी स्त्री ने पगड़ी मे जो
मोहरा बांध दिया था उसका यह गुण था कि जिसके पा
स रहे न वह आग में जले न पानी में डूबे न उसको बिष
व्यापै इसी से वह जीता रहा और उसका बिष उसे न व्यापा
तीन दिन पीछे वह अजगर घबराया और अपने मन में
कहने लगा कि यह मैंने क्या खाया जो पचता नहीं और पे
ट में दौड़ा दौड़ा फिरता है निदान वह अपने पेट के दुःख ने

से घबराता था और हातिम उसके पेट में चैन न लेता और दौड़ता फिरता और उसकी अंतड़ियों को अपने पैरों से लपेट के रौंदता निदान उसने जाना कि यह खाना सब दिन का खाया पीया निकालेगा इस बात को जी में समझ हातिम को उगल दिया तब हातिम बाहर निकल कपड़े सुखाने लगा जब वे सूख गये तब वहां से चला थोड़ी दूर गया था कि एक तालाब देख पड़ा यह सहसा दौड़ के उसके किनारे जा बैठा और अपने कपड़े धोने लगा इतने में एक मछली पानी से निकली उसका नीचे का धड़ मछली का और सिर से नाभि तक मनुष्य का था हातिम उसका अद्भुत आकार देख परमेश्वर की रचना को सराहने लगा टकटकी बांधे देख रहा था कि वह उसका हाथ पकड़ उसको तालाब में लेगई और अपने मकान में एक सुथरे बिछौने पर बैठा ला फिर आप एक सुन्दर स्त्री बन और नखसिख श्रृंगार कर हातिम के साथ संग करने का मनोर्थ किया उसने इस बात को न माना और कहा कि मैं एक काम के लिये अपना घर बिगाड़ यहां तक पहुंचा हूं तू बीच ही में ठगाई करके चाहती है कि मुझ को फोड़ रक्खे यह मुझ से कब होगा कि यहां तेरे साथ आनंद करूं परंतु इस प्रकार पर कि तू जहां से मुझ को लाई है वहीं पहुंचा दे तो मैं कुछ दिन तेरे साथ रहके तेरा मनोर्थ पूरा करों उसने इस बात को मान के कहा कि तीन दिन बीते जहां से तुझ को लाई हूं वहां पहुंचा दूंगी हातिम प्रसन्न हुआ और रुचि पूर्बक उसके साथ भोग बिलास कर तीन दिन बीते उससे कहा कि अब तू भी अपनी बात पूरी कर उसने उसका हाथ पकड़ पानी में गोता मारा और किनारे पर पहुंचा के कहने लगी कि तू मुझ को क्यों छोड़ता है हातिम ने कहा कि मुझ को एक ऐसाही

काम अवश्य है नहीं तो मैं तुझे और इस सुख चैन को छोड़
के क्यों दुख सहता यह बात सुन के वह चली गई उसने व
हां अपने कपड़े धोके और सुखला आगे चला बहुत दिनों
मे एक ऐसे पहाड पर पहुंचा जिस पर हजारों वृक्ष हरे
हरे भांति भांति के मेवों से लदे कोसों तक लहलहाते थे
और सैकड़ों सुथरे मकान चमक रहे थे और जगह जगह
नहरें बहतीं और फूली हुई फुलवारी शोभा देरही थीं जो
जगह थी सो सुहावनी थी यह थका मांदा तो था ही सोरहा
इतने में जिसका मकान था वह आ पहुंचा देखा कि एक
परम सुंदर तरुण मनुष्य अचेत सोता है वह उसके पा-
स आ बैठा हातिम कुछ बिलम्ब में जगा और आंखें मल
मल के देखने लगा तो अपने पास एक मनुष्य बैठा देखा
उसको देखतेही घबराया और उठके सलाम किया उस
ने पूछा कि तू कौन है और कहां जायगा और इस जंगल में
किस काम के लिये आया है हातिम ने कहा कि मैं दश्तह
वैदा को जाऊंगा भला हुआ कि आपके भी दरशन हुये आगे
जो परमेश्वर की इच्छा उसने कहा कि तू उस महा कठिन
मनोरथ को अपने मन से दूर कर मुझको यह शोच होता है
कि तेरे मित्रों मे ऐसा शुभचिंतक कोई न था जो तुझ को
रोकता उसने कहा कि मैं कुछ अपने प्रयोजन के लिये नहीं
जाता हूं मैंने परमेश्वर के हेत साहस किया है और ढूंढने
के मार्ग मे परिश्रम का पांव रक्खा है आगे जो परमेश्वर क
रे मुनीरशामी खवारज्म का शाहज़ादा बरज़ख सौदाग
र की बेटी हुस्नबानू पर आशिक हुआ है और वह सात बा
तें कहती है जो कोई वे सातों बातें पूरी करेगा उसके साथ
वह व्याह करेगी वह शाहज़ादा उसको पूरा न कर सका
तब उसने अपने शहर में उसे रहने न दिया वह वहां से

निकल जंगल में मारा मारा फिरने और पुकार पुकार रो ने लगा ऐसी दुर्दशा से मेरे मकान मे आया और मुझ से मिला मैने समाचार पूछा उसने अपना सब वृतांत ओर से छोर तक ब्योरे वार मेरे सामने बरणन किया उस समय मैने यह विचारा कि उसका वृतांत तो पूछा और उसकी सहाय न की यह बात बहुत अनुचित है इसलिये साहस बांधा और इतनी आपदा अपने सिर पर ली यह सुन उस मनुष्य ने कहा कि जान पडता है कि तू तैना का बेटा हातिम है क्योंकि उसके बिना इस संसार मे दूसरा कौन है जो ऐसा काम करे और दूसरे के लिये आप आपदा में पडे पर कुछ चिंता मत कर परमेश्वर परम कृपाल दीन दयाल है इस कठिन बात को भी सुगम कर देगा परंतु मेरे जी मे यह संदेह है कि दश्तह वेदा से कोई फिर के नहीं आया और जो आया भी है तो सचेत नहीं रहा यह मेरी शिक्षा मन मे स्मरण किये रहना कि जिस समय तू दश्तह वेदा के पास पहुंचेगा तो तुझे अंधेरे में लेजायेंगे तू चुपका चला जाना कहीं बल करके अड न रहना और जो कोई मनोहर कान्ता तेरा अभिलाष करे उस्से प्रीति न करना उनके पीछे एक परम सुकुमारी चन्द्र मुखी आवेगी जिसके देखने से तेरा मन तेरे हाथ न रहेगा और विबश हो जायगा पर परमेश्वर के लिये कहीं धीर्य न छोड़ना और चंचलता न करना वह जब तेरा हाथ पकडैगी उसी समय तू दश्तह वेदा को जा पहुंचैगा जो सात दिन तक उस्से कुछ काम की कहेगा तो अपने जी ते जी लज्जित रहेगा ये इसी बातों में थे कि एक तरुण मनुष्य दो खीर और पानी के कटोरे अपने हाथों पर धरे आकाश से उतरा और उनके आगे रख दिये उन दोनो ने पेट भर खाया और परमेश्वर का धन्य बाद करके रात काटी हातिम उस्से

बिदा होके किसी जंगल की ओर चला थोड़े दिनों मे एक र
मणीक तालाब पर जा पहुंचा और उस के किनारे बैठ के
पानी पीने लगा इतने में एक परम सुंदर स्त्री सर से पांव
तक नंगी पानी से निकली और हातिम का हाथ पकड़ फिर
उसी तालाब में गोता मार के चली गई ज्योंहीं हातिम का पां
व धरती पर पहुंचा आंखें खोल के जो देखा तो आप को और
उस सुकुमारी को एक फूले फले बाग़ में पाया यह देख हाति
म भुचक रहगया वह उसका हाथ छोड़ किसी ओर चली गई
और हातिम इधर उधर का चरित्र देखता फिरता था कि ह
ज़ारों परम सुन्दरी झूंड बांधे गल बाहीं डाले सिर से पांव त
क गहन में लदी हुई किसी ओर से निकल आईं और हाति
म को अपनी ओर खींचने लगीं उसने किसी की ओर मन
न किया और न किसी को सर उठा के देखा कि ये कौन हैं औ
र क्या करती हैं क्योंकि उस मनुष्य का कहना उसको स्मर
ण था और अपने मन में कहता कि हातिम कहीं ऐसा न हो कि
धीर्य का पांव डिगे और तू वृथा इस कल के गढ़हे मे गिरै
सावधान रह कि अंधेरा यही है निदान वे हातिम को ऐसे
मकान मे लेगईं कि वह सब का सब रत्न जटित बना था
उसमें लाखों तसवीरें चारों ओर लगीं थीं और एक सुथ
र मकान में बड़े चमत्कार से जड़ाऊ तख़्त बिछा था जब
वह उसके पास पहुंचा तब वे सब की सब दीवार की तस
वीरें होगईं और हज़ारों अपसरा उस महल की दीवार
से निकलीं वह एक २ की ओर अचंभे से देख रहा था कि हे
परमेश्वर यह क्या चरित्र है ये कहां से आईं और दीवार
की तसवीरें क्यों होगईं निदान उस तख़्त के पास तो ख
ड़ा ही था अपने जी मे कहने लगा कि हातिम जो न यहां तक
पहुंचा है तो इस तख़्त पर बैठ पह सोच के ज्यों ही उस पर पांव

रक्खा त्योंहीं उस में से एक तड़ाके का शब्द आया उसने
जाना कि इसका पाया टूट गया नीचे झांकने लगा उस तख़्
त को वैसे का वैसाही पाया फिर उस पर बैठ गया फिर उ
स्से वैसाही शब्द आया उस शब्द के साथ ही वह सुकुमा
री जो सब से सुन्दर और डील डौल में बड़ी थी सो दीवार
की तसवीरों को छोड़ बड़े हाव भाव और कटाक्ष सहित
हातिम के पास चली आई हातिम उसको ऐसी भांति दे
ख के अचम्भे मे हुआ और अपने जी मे कहने लगा कि
परमेश्वर अभी तो यह तसबीर थी फिर क्योंकर इसको
र कटाक्ष से घूंघट निकाले इस तख़्त के आगे आके ख
ड़ी हुई उसे देख के धीर्य होके चाहता था कि उसका घूंघट
खोल के उसके मुख को देखै कि उस मनुष्य की बात स्मर
ण आई वहीं वह संभल गया और जी मे कहने लगा कि
जो मैं इसका हाथ पकड़ूंगा तो फिर कभी इस अंधेरे से
बाहेर न आऊँगा यह चरित्र देखा चाहिये कि यह मेरा हा
थ आपसे पकड़ती है और मैं इस अंधेरे से बाहेर जाता
हूं वा नहीं वह इसी अभिलाष में तीन दिन रात तक उसी
जड़ाऊ तख़्त पर बैठा रहा जब रात होती थी तब आपही
आप एक एक मकान मे काफ़ूर की बत्तियां प्रकाशित हो
जातीं और एक एक ओर से गाने बजाने का शब्द चला आ
ता था और जो वे दीवार की तसवीरें थीं सो सदेह हो के ना
चती थीं और वह सुंदरी तख़्त के आगे खड़े हुये देखती
और मुसक्याती थी और भांति भांति के पेंच हातिम के
आगे धरे थे वह कितनाही खाता पर पेट न भरता बड़े अ
चम्भे मे होके कहता कि परमेश्वर मैं इतना खाता हूं
पर तृप्त नहीं होता यह क्या कारण है निदान ऐसेही तीन
दिन बीत गये चौथे दिन उसके जी मे आया कि जो मैं ज

न्म भर यहां रहूंगा तो इस मेवे से त्रप्त न होंगा और न यहां से
निकलूंगा और मुनीरशामी को जो भरोसा दे के छोड़ आया
हूं जो उसको कुछ होजायगा तो परमेश्वर को क्या उत्तर दूं
गा यह जी में सोच ज्यों उस सुकुमारी का हाथ पकड़ा त्योंहीं
एक और चंद्र मुखी उस तखत के नीचे से निकली उसने हा
तिम के एक ऐसी लात मारी कि कहीं का कहीं जा पड़ा और व
हां सिर उठा के जो देखा तो न वह सुकुमारी देख पड़ी न वह
तखत और बाग़ दिखाई दिया एक बहुत बड़ा सुनसान
जंगल देखा जिसका और न छोर तब उसने जाना कि द
शतह वेदा यही है और वह मनुष्य यहीं होगा जो कहता है
कि एक बेर देखा दूसरी बेर देखने का अभिलाष है अब
उसे ढूंढिये इसी बिचार में इधर उधर फिरता था इतने मे
किसी ओर से यह शब्द उसके कान में आया कि एक बेर दे
खा दूसरी बेर देखने का अभिलाष है ऐसे ही दिन भर
मे तीन तीन बेर सात दिन तक यह शब्द बारम बार उस
के कान मे आया किया जब आठवें दिन सांझ समय वह
शब्द उसके कान में आया तब उसी ओर दौड़ा गया तो
क्या देखा कि उजली दाढ़ी का एक मनुष्य धरती पर बैठा
है हातिम ने उसके आगे जाके सलाम किया उसने उस
के सलाम का उत्तर दे के कहा कि तुम कहां से आये हो
और इस जंगल में तुम्हारा क्या काम है हातिम ने कहा में
इस खोज के लिये अपने शहर से निकला हूं कि तुमने ऐ
सा क्या देखा है जिसके देखने का दूसरी बेर अभिलाष है
परमेश्वर के लिये कहो उसने कहा कि तुम बैठो मैं कहूं
गा इस बात के सुनते ही हातिम बैठ गया जब रात हुई
तब दो रोटियां और दो कटोरे पानी के आपही आप उन
के आगे आ रहे एक रोटी और एक पानी का कटोरा उस

ने आप लिया और दूसरा हातिम को दिया दोनों ने रोटियां खाईं और पानी पिया जब खा पी चुके तब हातिम ने कहा कि अब कहो वह बोला कि हे बटोही मैं चलता फिरता एक दिन एक सुढार तालाब पर आ निकला उसके किनारे बैठ के तमाशा देखने लगा इतने में एक परम सुन्दरी सुकुमारी स्त्री सिर से पांव तक नंगी उसी तालाब से निकली और मेरा हाथ पकड़ उसमें ले गई मैंने नीचे जाके जो आंख खोली तो एक बाग़ परम अद्भुत रमणीक देख पड़ा और बहुत सी परम सुन्दर सुकुमारी चन्द्रमुखी स्त्रियां घूंघट निकाले तख़त के पास आ खड़ी हुईं देखते ही मुझ को मूर्छा आ गई और मेरा मन मेरे हाथ से जाता रहा जब मैंने धीर्य करके घूंघट उठा उसका मुखड़ा देखा तो परम अद्भुत रूप दिखाई दिया जब मैंने हाथ पकड़ उसको अपनी ओर खींचा तब एक सुन्दर स्त्री तख़त के नीचे से निकली और उसने एक लात ऐसी मारी कि मैं उस मनोरम मकान से इस उजाड़ जंगल में आ पड़ा और वह रमणीक स्थान मेरी दृष्टि से लोप हो गया उसी दिन से अब मैं आठों पहर रोता रहता हूं और कुछ काम नहीं करता और चाहता हूं कि उसे अपने मन से भुलाऊं पर वह नहीं भूलती यह कह के उसने चिल्लाय हाय हाय कर ठंढी सांस ले बगूले के समान धूर सिर पर डाल उस जंगल में दौड़ने लगा और यही कहता था कि एक बेर देखा है दूसरी बेर देखने का अभिलाष है तब हातिम ने जाना कि यह आशिक़ है और कहा कि जो तुम उस तमाशे को देखो तो प्रसन्न हो उसने कहा कि यह बात कठिन है यद्यपि मैं गले भर धरती में माथा रख यही मांगा करता हूं कि हे बिछुड़ों के मिलाने वाले मुझको मेरी प्यारी से मिलादे पर कुछ नहीं होता हातिम ने कहा कि तू मेरा

साथ चल मैं तुझे देखा दूंगा इस बात को सुन के वह हातिम के
साथ होलिया कुछ दिन में दोनो उस वृक्ष के नीचे जो उस
तालाव के पास था जा पहुंचे हातिम ने उस बूढ़े मनुष्य
से कहा कि जो तू उस कान्ता को सदा देखा चाहता है तो क
भी उसका हाथ न पकड़ना और न उसका घूंघट उलटना
तो वह सदा तेरे आगे हाथ बांधे खड़ी रहेगी और जो उसका
हाथ पकड़ेगा तो फिर आप को उसी जंगल मे देखेगा औ
र फिर उस मकान में कभी न जा सकेगा मैं जो इस मकान
में आया तो एक ग्यान वान मनुष्य की शिक्षा थी नहीं तो व
हां आने की मेरी क्या मजाल थी अब तू आगे जा वही ता
लाव है इस बात के सुनते ही वह बिरह का मारा उस तालाव
पर पहुंचा इतने में एक स्त्री नंगी उस पानी मे से निकली
और उसका हाथ पकड़ पानी में लेगई और हातिम शाहा
बाद की ओर चला बहुत दिनो मे आपदा के क्लेश सहता उ
स फ़क़ीर के पास आया और उस्से मिल के वहां से भी चला
फिर थोड़े दिनों में उस मछली के घर पहुंचा और महीना भ
र वहां रहा फिर वहां से बिदा हो रीछों के जंगल में गया औ
र रीछ की लड़की से मिल दो महीने उसके पास भी रहा फि
र उसके पास से गीदड़ों के यहां आया उनको देख भाल कु
छ दिन मे शाहाबाद पहुंचा हुस्न बानू के लोग उसको
हाथों हाथ उसकी हवेली तक ले गये और हुस्न बानू से
कहा कि हातिम कुशल क्षेम से आया है उसने सुनते ही
उसे बुलवा के परदे के पास बैठाला और पूछा कि क्या स
माचार लाये कहो उसने कहा कि एक बूढ़ा मनुष्य अंध
कार में एक परम सुन्दर स्त्री पर आशिक़ होके जंगल मे
आपड़ा था और पुकारता फिरता था कि एक बार देखा दू
सरी बार देखने का अभिलाष है मैने उसको उसकी प्यारी

तक पहुंचादिया अब वह शब्द उस जंगल से नहीं आता इस
बात को सुन हुस्न बानू और उसकी दाई सुन के हातिम के सा
हस और परिश्रम पर धन्य धन्य किया फिर हातिम ने कहा
कि हे हुस्न बानू अब दूसरी बात कहो कि मैं उसके लिये भी
परिश्रम करूं और ढूंढ के पता लगाऊं उसने बड़ी करुणा औ
र कृपा से कहा कि हातिम तुम बहुत से दुख सहि के आये हो
थोड़ा ठहर के कुछ दिन बिश्राम करो हातिम ने कहा कि मुझ
को बिश्राम उसी दिन होगा जब परमेश्वर की कृपा से तुम्हारी
सातो बातें पूरी करूंगा यह कह के उठ खड़ा हुआ और कार
वां सराय में आठ दिन तक मुनीरशामी शाहज़ादे के पास र
हा और और से छोर तक सब वृतांत कहा फिर नवें दिन हु
स्न बानू के पास जाके कहा कि तेरी दूसरी बात कौन है पर
मेश्वर के लिये कहो ॥ ———

दूसरी कहानी मे हातिम का उस मनुष्य के पास जाना जिसने अपने द्वार पर लिख रक्खा था कि भलाई कर समुद्र में डाल और उसके समाचार लाने का बरणन

हुस्न बानू ने कहा कि दूसरी बात यह है कि एक मनुष्य ने अ
पने द्वार पर लिख के लगादिया है कि भलाई कर और समु
द्र में डाल इसका का भेद है और उसने ऐसी का भलाई की है
उसके समाचार ला इस बात के सुनते ही हातिम उठ कर खड़ा
हो पूछने लगा कि वह कौन है और किस ओर रहता है हुस्न
बानू ने कहा कि मैंने अपनी दाई से सुना है कि उसकी जगह
उत्तर की ओर है यह बात सुन परमेश्वर के भरोसे पर चल
दिया बहुत दिन बीते एक भयानक बन में जा पहुंचा और सां
झ समय एक वृक्ष के नीचे चुप चाप बैठ रहा इतने में दुखभ
रा रोने का ऐसा शब्द किसी ओर से उसको सुन पड़ा कि जि

सके सुनतेही उसकी आंखौं मे आंसू भर आये और कलेजा
जलने लगा सहसा जी मे कहा कि यह बात भलौं को अनुचि
त है कि एक मनुष्य आपदा में पड़ा रोवे और तू उसकी सहा
य न करै और उसका वृतांत न पूछे यह बात मन मे ठहरा
उसी ओर चला थोड़ी दूर चला होगा कि वहां जा पहुंचा जहां
से रोने का शब्द आता था क्या देखा कि एक परम सुन्दर तरु
ण मनुष्य अपने कोमल कपालौं पर आंखौं की सीपौं से
आंसू के मोती बहारहा है और व्याकुल हो कराह कराह य
ह कहता है कि मेरे मित्रो मै कहां जावं और किस्से कहूं मेरे
दुःख का वृतांत तुम्हीं विचार देखो जो मुझ पर बीते हैं उसे मैं
लिख नहीं सकता और उसके कहने में गूंगा हूं हातिम ने क
हा कि तुझ पर ऐसा क्या दुख पड़ा है कि तू इतना व्याकुल हो
घबरारहा है उसने कहा कि मै सौदागर हूं और यहां से बा
रह कोस पर एक बड़ा शहर है उसमें हारस नामी सौदाग
र अति धनवान रहता है और उसकी लड़की ऐसी रूप
वती है जिसको देख चन्द्रमा भी लज्जित होता है एक दिन
अनायास मै फिरता फिरता सौदागरी का माल लिये हुए
उस शहर मे जा निकला धूप के मारे हारस की हवेली के नी
चे बैठगया मेरी दृष्टि जो कोठे की ओर गई तो एक परम सु
न्दर चंद्र मुखी स्त्री देख पड़ी उसे देख मैं व्याकुल होगया
तब मैंने उस शहर के लोगों से पूछा कि यह कौन है और य
ह किसकी हवेली है उन्होंने कहा कि यह हारस सौदागर
की बेटी का महल है और वह बड़ा धनवान है फिर उन
से पूछा कि इसका ब्याह होगया है कि नहीं लोगोंने कहा
कि इसके ब्याह करने मे उसके बाप का वश नहीं चलता
इस लड़की का ब्याह उसी के आधीन है उसकी तीन बातें
हैं जो उनको पूरी करेगा उसी के साथ वह अपना ब्याह।

करेगी इस बात के सुनतेही मैं उसकी डेवढ़ी पर गया द्वार पाल ने उसको समाचार पहुंचाया उसने मुझे बुलवा लिया और एक अच्छे बिछौने पर बैठा के कहला भेजा कि जो तू अपने बचन पर दृढ़ रहे तो मैं अपनी बातें कहूं मैंने कहा कि तन मन से अंगीकार है उसने कहा कि जो तू मेरी बातें पूरी करैगा तो मैं तेरीही होके रहूंगी और जो यह भेद खोलैगा तो तुझे अपना नहीं जानूंगी मैंने इस बात को माना और बचन दिया तब उसने कहा कि मेरी पहिली बात यह है कि इस शहर के पास एक गड़हा है वहां आज तक कोई नहीं गया और नहीं जान पड़ता कि उसका अंत कहां तक है दूसरी बात यह है कि शुक्रवार की रात को जंगल से एक शब्द आता है कि मैंने वह काम न किया जो आज की रात मेरे काम आता - तीसरी बात यह है कि जो मोहरा सांप के पेट में है उसको मुझे लादे इस बात के सुनतेही रही सही मेरी बुद्धि जाती रही मैंने जो मेर खींचा मेरा धन रत्न और सब संपदा लूटली और मुझको अपने शहर से बाहर निकाल दिया मैं बिबश हो इस जंगल में आ पड़ा एक तो संपदा गई दूसरे बदनाम हुआ तीसरे प्रीति का तीर कलेजे पार हुआ सथियोंने साथ छोड़ा मैं भिखारी होगया हातिम ने कहा कि तू धीर्य कर मुझे उस शहर में ले चल तेरी वस्तु भी तुझे दिलवा दूंगा और तेरी प्यारी से भी मिलाओंगा उसने कहा कि प्यारे जो वह हाथ लगे तो मैं धन रत्न की चिंता नहीं करता क्योंकि कहते हैं कि प्यारी का देखनाही असंख्य धन है हातिम उस प्रीति के बावले को साथ ले शहर में आया और सराय में उतरा और सौदागर को बैठा आप उसके द्वार पर गया और कहा कि मैं ब्याह करने आया हूं द्वार पालोंने कहा कि एक मनुष्य तुझे ब्याहने आया है उसने सुनते ही परदा डाल हातिम

का घर में बुला के जो बचन उस्से लिया था सो इस्से भी लिया
तब हातिम ने कहा कि तू हारस सौदागर की बेटी है औ इस
बात पर हाथ मारे और बचन दे कि जिस दिन परमेश्वर की
कृपा से यह काम पूरा करूं उस दिन जिसे चाहूं तुझको उसे
देदूं तो तेरी बातों के लिये परिश्रम करूं उसने कहा बहुत अ
च्छा तब हातिम ने कहा कि अपने बाप को बुलवा उसने हारस
को बुलवा लिया हातिम ने ये बातैं उस्से कहीं उसने भी मान
लीं फिर हातिम ने उस लड़की से कहा कि अपनी बातैं प्रगट
कर उसने कहा कि इस शहर के पास एक गड़हा है इस शह
र के सब लोग उसे जानते हैं तू उसके समाचार ला कि यह कि
तना गहरा कितना लम्बा कहां तक है और उसमें क्या है इस
बात के सुनते ही हातिम वहां चला शहर के बहुतेरे लोग उ
सके साथ आये और उस गड़हे को दिखला के चले गये हाति
म उसमें कूद पड़ा एक रात दिन ढुलकता चला गया थोड़ी दि
लम्ब में कुछ प्रकाश दिखाई दिया तब हातिम ने जाना कि
इस गड़हे का अंत आगया अब यहां से फिरिये इतने में उ
सने यह सोचा कि जो कोई इसका वृतांत पूछैगा तो मैं उ
सको क्या उत्तर दूंगा यह समझ के आगे बढ़ा थोड़ी दूर आके
एक चौड़ा मैदान बहुत सुहावना देख पड़ा और उसमें एक
तालाब बहुत अच्छे निर्मल जल से भरा दिखाई दिया हाति
म अपने साथ एक पानी की सुराही और थोड़े बादाम लेग
या था कभी कभी दो तीन बादाम खाके एक आध घूंट पानी
पी लेता और रात दिन चला जाता जब पानी चुक गया तब उ
सने तालाब का पानी पिया और सुराही भर के आगे बढ़ा
सामने से एक दीवार ऐसी देख पड़ी कि जो दृष्टि का पथिक
अपनी पगड़ी थांभ के देखे तो भी उसके मुंडेरे तक न पहुंचे
और अनुमान का पक्षी प्रलय पर्यन्त उसके अंत तक न जा

सकै यह आगे बढ़ा और उस दीवार के पास जाके जो देखा तो एक दरवाज़ा दिखपड़ा यह भीतर गया वहां एक सुन्दर देवी के पास पहुंचा तब हज़ारों देव दौड़े और चाहा कि उसे टुकड़े टुकड़े करके खाजावैं इस बीच उन में से एक ने कहा कि मित्रो यह मनुष्य है इसको तुम न मारो इस का मान्स बहुत स्वादिष्ठ होता है जो तुम इसे खाडालोगे और समाचार राजा को पहुंचेगा तो तुम सबों को मारडालेगा यों उचित है कि इसको यहां न छोड़ें राजा के पास ले चलें उन्होंने कहा कि हमारा बैरी ऐसा कौन है जो राजा से कहेगा उसने कहा कि यह क्या कहते हो आपु सही में बहुत बैरी हैं यह मेरी बात स्मरण है उचित यही है कि तुम सब इस्से हाथ उठाओ इस बात को सुन के वे डरे और उसको छोड़ अपने घर चले गये हातिम ने उस जगह से पांव बढ़ा के एक ओर का रस्ता पकड़ा इतने में उसे एक गांव देख पड़ा उसने जाना कि इस में मनुष्य बसे होंगे यह समुझ आगे गया तो बहुत से देवों ने आके चारों ओर से घेरलिया और उसके खाने का विचार किया उनमें से भी एक ने कहा कि इसको तुम न खाओ और जीता राजा के पास पहुंचाओ क्योंकि उसकी बेटी बहुत बेराम है कदाचित इसकी औषधि से अच्छी होजाय उन्हों ने कहा कि तू क्या कहता है हम तो सैकड़ों मनुष्यों को लेले गये और लज्जित हुये हमैं क्या आवश्यकता जो लेजावैं राजा के राज्य में तो आही पहुंचा है अब कहां जासकैगा कोई न कोई राजा तक पहुंचा देगा हातिम वहां से भी आगे बढ़ा उस को एक गांव फिर देख पड़ा वहां के देव उसको अपने सरदार के पास लेगये उस सरदार की स्त्री की आंखें दुखतीं थीं और आठों पहर पानी बहा करता उस सोच से सरदार सिर झुकाये बैठा था उसने हातिम को

देखते ही सिर उठा के उनसे कहा कि तुम अपने बाप को क्यों लाये चलो मेरे सामने से दूर हो और इसे छोड दो यह जहां चाहे वहां चला जाय हातिम ने उसे बडे सोच मे देखके पूछा कि तुम को किस बात का सोच है उसने कहा कि भाई मेरी स्त्री की आखें दुखतीं हैं इसी चिंता में रात दिन का सुख चैन छोड दिया है हातिम ने कहा तू धीरज रख मैं तेरी स्त्री की आंखें अच्छी कर दूंगा इस बात के सुनते ही वह अपनी जगह से उठा और हातिम का हाथ पकड अपने घर ले जा के अपनी जोरू के पास बैठाल दिया और कहने लगा कि जो तेरी औषधि से यह अच्छी होगई तो जब तक जीती रहे गी तेरा गुण मानेंगी और मैं भी यथा शक्ति कुछ न कुछ सेवा करूंगा यह सुन हातिम ने उससे कहा कि जो तू इस बात को मानें कि जो मैं तेरी जोरू को अच्छी करूं तब तू मुझे अपने राजा के पास ले जाके मेरी चिकित्सा का बखान उसके सामने करे तो मैं उसे औषधि दे अच्छा करूं उसने अपने इष्ट की सौगंद खाके कहा कि बहुत अच्छा जो तेरे उपाय से यह अच्छी होगई तो मैं तुझे राज सभा में लेजा के राजा से मिला दूंगा हातिम ने एक मोहरा पगड़ी से खोल पानी में घिस उसकी आखें में लगा दिया उसी क्षण पीर जाती रही ऐसे ही दो तीन बेर लगाया कटोरा सी आखें खुलगईं और पानी बंद होगया वह सरदार बहुत प्रसन्न हुआ और उसकी बहुत सी सेवा की कुछ विलम्ब में हातिम को अपने साथ राजा के पास लेगया और उसकी श्लाघा कर बिनती की कि महाराज यह मनुष्य संसार में बड़ा बुद्धिमान है और चिकत्सा मे इसके समान दूसरा नहीं मेरी जोरू की आखें कई वर्ष से दुखती थीं इसने पल में अच्छी कीं यह सुनि राजा ने हातिम से बड़ी कृपा कर कहा कि मुझ

को भी पेट की पीर का रोग है और मेरी जाति से कोई औष
धि नकरसका जो तेरे हाथ से आराम हो तौ मैं भी जन्म भ
र तेरा गुण मानूं हातिम ने कहा जिस समय तुम भोजन
करते हौ उस समय तुम्हारे पास कितने सरदार इकट्ठे
होते हैं उसने कहा कि जितने छोटे बड़े हैं सब वहां होते हैं
हातिम ने कहा कि आज मैं भी वहां बना रहूं वह बोला बहु
त अच्छा इतने में भांति भांति के व्यंजन उसके सामने रक्खे
गये उसने चाहा था कि उस पर हाथ डाल के कुछ भोजन
करै हातिम ने कहा कि महाराज थोड़ा ठहरजाइये वह रु
क गया तब हातिम ने एक बासन पर से ढकना उठाया और
सब को दिखा के फिरि बंद करिदिया एक क्षण में कहा कि
उसे खोल कैं देखो जो खोल के देखा तौ वह बासन कीड़ौं
से भरा था राजा यह चरित्र देख अचंभे में हो कहने लगा
कि यह क्या कारण है हातिम ने कहा कि यह दोखौं की दृष्टि
का कारण है आप भोजन स्थान में अकेले भोजन किया
करैं जिससैं ये न देखैं उसने वैसाही किया उस दिन पेट में
पीर न हुई तीन दिन में सब भांति से अच्छा होगया तवहा
तिम से कहने लगा कि मुझ से क्या चाहता है मांग ले उसने
कहा कि मनुष्य हूं मेरे भाई तेरे यहां क़ैद हैं उनको छोड़
दे तौ बड़ी कृपा है इस बात के सुनतेही राजा ने उनको बुल
वा के उत्तम बागे दे प्रसन्न कर कुछ राह खर्च दे बिदा कि
या फिरि हातिम से कहने लगा कि मेरा एक काम और है
जो तू मानै हातिम ने कहा कि आज्ञा कीजिये मैं तन मन से
करूंगा राजा ने कहा कि मेरी बेटी बहुत दिनों से बेराम है
उसको देख के कुछ उपाय करौ तौ मैं बहुत ही गुण मानौं
इस बात के सुनतेही हातिम उठ खड़ा हुआ राजा अपने
साथ महल में लेगया हातिम ने उस लड़की को देखा कि

बहुत दुबली होरही है और रंग भी पीला पड़गया है फिर
हातिम ने कहा कि थोड़ा शरबत बना लाओ जब शरबत
आया तब उस मोहरे को उसमें घिस के उसे पिलादिया
एक क्षण बीते दस्त आने लगे सब दिन ऐसे बीता सांझ स
मय कई बेर बमन हुआ और मूर्छा आगई राजा डर के कह
ने लगा कि यह क्या दसा हुई ऐसा न हो कि यह मरजाय हा
तिम ने कहा कुछ चिंता न करो परमेश्वर अच्छा करैगा—
सारी रात ऐसे बीती प्रातःकाल होते उसको भूख लगी खं
ना मंगा के कुछ खाया पंद्रह दिन में सब रोग जाता रहा मु
ख चमकने लगा हातिम ने कहा कि अब आप की बेटी अ
च्छी होगई मुझे बिदा करो तो अपने काम के लिये जाऊं राजा
ने बहुत से रुपये मोहरें रत्नों के थाल मंगवा के आगे ध
रे और कहा यद्यपि यह तुम्हारे योग्य नहीं पर हमारी प्रस
न्नता यही है कि इसे अंगीकार करो हातिम बोला कि मैं अ
केला इनको कैसे उठाओं और कहां लेजाउ राजा ने अपने
लोगों को बुला के कहा कि यह सब धन रत्न तुम अपने सि
र पर लेके इसके साथ लेजाव हातिम उस्से बिदा हुआ
राजा के लोगों ने उसे सब वस्तु समेत एक महीने में उस
गड़हे पर पहुंचा के चले गये हारस की बेटी ने कई खोजी
उस गड़हे पर बैठाल रक्खे थे वे डर के भागे तब हातिम ने
पुकार के कहा कि मत भागो मैं वही हूं जो गड़हे के समा
चार लेने गया था ईश्वर की कृपा से जीता आया हूं वह उ
सकी बोली पहिचान के फिरे तो क्या देखा कि हातिम है रुव
पर उस वस्तु को उठवा के सराय में ले आया और उसी सो
दागर को दे डाला वह उसके पाव पर गिर पड़ा उसने उस
को गले से लगालिया फिर यह समाचार उस लड़की को
पहुंचा उसने हातिम को बुलवा के गड़हे का वृतांत पूछा ह

तिसने गड्हे का ब्यौरा उसको सुना के कहा कि एक बात मैंने पूरी की अब दूसरी कहो उसने कहा कि शुक्रवार की रात को एक शब्द सुनाई देता है कि वह काम मैंने न किया कि आज की रात मेरे काम आता यह सुन हातिम वहां से बिदा हो जंगल को चला कुछ दिन मे वह शब्द उसके कान में आया यह उसके खोज में रात दिन फिरने लगा कि एक गांव दृष्टि पड़ा वहां के लोग रोते पीटते थे यह आगे बढ़ के उन मनुष्यों से पूछने लगा कि तुम सब के सब क्यों रोते और प्राण खोते हो किसी ने कहा सातवीं तारीख एह स्पति के दिन एक बड़ा राक्षस आता है और एक मनुष्य को खा जाता है जो उस समय वह किसी को न पावे तो सब शहर उजाड़ दे इस बेर रईस के लड़के की बारी है इस लिये सब रोते हैं यह सुन हातिम रईस के पास गया और उसे धीर्य दे कहा कि तू चिंता मत कर तेरे बेटे के बदले में जाऊंगा वह हातिम के इस साहस को सराह के बोला कि हे शूर उसके आने में चारि दिन रहे हैं हातिम ने कहा कि उसका आकार कैसा है जो किसी ने देखा हो तो मुझे बतलावै रईस ने उसका आकार धरती पर खींच के दिखा दिया हातिम ने कहा कि उसका नाम हल्लूका है न किसी से मारा जायगा न किसी की चोट खायगा जो मेरा कहना मानो तो मैं तुम्हारे सिर से यह उत्पात टालूं जैसे बने वैसे उसको मारों यह सुन वह प्रसन्न हो कहने लगा क्या आज्ञा करते हो हातिम ने कहा कि तुम्हारे शहर में कोई शीशागर भी है उसने कहा कि जितने चाहिये उतने हैं फिर हातिम और रईस शीशागरों की दूकान पर गये और कहने लगे कि आज के दिन समेत चार दिन में एक आईना दो सौ गज़ लम्बा और सौ गज़ चौड़ा

बना दो कि यह उत्पात टले नहीं तो सब गांव को खाजाय
गा निदान रईस ने उसी घड़ी इतने बड़े आईना बनाने
की सब वस्तु मंगवादी उन्होंने उतनाही बड़ा आईना ती
न दिन में बनादिया फिर हातिम से कहा वह बोला कि
तुम छोटे बड़े इस बस्ती के इकट्ठे होके हाथों हाथ इस आ
ईने को लेजा के वहां खड़ा कर दो जहां वह उत्पात आता
है उन्होंने वैसाही किया हातिम ने फिर उन से कहा कि
अब कोई एक उजली चादर लावे जिस में आईना ढक जा
य वे उसी घड़ी चादर भी लाये और आईने को ढांपदिया
फिरि हातिम ने उन से कहा कि यारो अब अपने अपने घ
र का रास्ता लो और धीर्य किये रहो जो किसी का जी तमा
शा देखने को चाहता हो वह मेरे साथ रहे कोई न बोला
पर रईस के लड़के ने कहा कि मैं तुम्हारे पास रहूंगा त
व उसके बाप ने कहा कि पिता के प्राण पियारे ऐसा उप
द्रव न कर मैंने तेरेही लिये इतने रुपये उठाये और तूभी
उसके आगे जाता है वह बोला कि बाबाजान तुमने तो इस
का भोजन शुरू को पहलेही बना रक्खा था अब क्या है जो
यह कहते हो मेरी प्रसन्नता इसी में है कि इसके साथ
जाऊं क्योंकि मुझ को इस दुष्ट के चुंगल से बचाता है य
ह कौनसा न्याय है कि यह तुम सबों के लिये जान बूझ
अजगर के मुह में जाता है और तुम उसको अकेला-
छोड़े जाते हो निदान उसने बाप की बात न मानी प्रस
न्नता पूर्वक उसके साथ रहा जब दिन बीत गया और
रात हुई तब वह शब्द पहले के समान उनको सुन पड़ा
सब के सब डर गये थोड़ी बेर में हल्लूका गेंद सा दृष्टि प
ड़ा ऐसा कि नौ हाथ नौ पांव नौ मुंह देह में हैं और लोट
ता चला आता है और धुआं और ज्वाला सब मुहों से

निकलती है उस गांव के रहने वाले जो कोस दो कोस दूर।
खड़े तमाशा देखते थे डर के भाग गये हातिम ने जब देखा
कि वह आ पहुंचा तब चादर को आईने के ऊपर से उठा।
लिया हल्लूका ने जो अपना शरीर देखा तो सांस खींच के
असी चीख मारी कि उस गांव और जंगल की धरती हिलि
गई और सब को मूर्छा आई निदान उसकी सांस यहां
तक खिची कि पेट फटगया तब वैसा ही एक भयानक श
ब्द जंगल में फिरि हुआ कि रहे सहे भी अचेत होगये जब
चेत हुआ तो क्या देखते हैं कि हल्लूका मरा पड़ा है और उ
सके पेट की कंदला ई से सारा जंगल भरगया नीले पानी
की नदी बहती है तब रईस और उसका बेटा प्रजा सहित
हातिम के पैरों पर गिरि के पूछने लगे तुम उस्से कैसे ब
चे और वह कैसे मारागया तब हातिम ने। कहा कि उस
का नाम हल्लूका था वह किसी से न मारा जाता पर यही उ
पाय था कि आपही को देखि किसी और को न देखै तब
क्रोध से इतनी सास खींचे कि पेट फूल के फट जाय इस बा
त के सुनते ही उन्हों ने अपने अपने योग्य भांति भांति
का धन रत्न लाके उसके आगे रकवा और हाथजोड़ वि
नती करके कहा कि इसको अंगीकार करो तो हमारा संतो
ष हो हातिम ने कहा कि मैने इस धन रत्न के लालच से
यह काम नहीं किया मैं तो परमेश्वर के हेत असे काम क
रता हूं और बहुत दिनों से असेही कामों पर सन्न धरताहूं
फिर उन्होंने पूछा कि आप का आना इस ओर कैसे हुआ
हातिम ने कहा कि आज शुक्रवार है मैने यों सुना है कि इस
जंगल से एक शब्द असा आता है कि मैने वह काम न कि
या कि आज की रात मेरे काम आता इस बात के निश्चय क
रने को अपने शहर से निकला और यहां तक आपहुंचा हूं

अब चला जाऊंगा रईस ने कहा कि मैं भी बहुत दिनों से
इस शब्द को सुनता हूं पर न जाना कि किसका शब्द है और
र कहां से आता है हातिम दिन भर वहीं रहा जब रात हुई
तब वही शब्द फिरि आया वह उसके सुनते ही उस ओर च
ला एक दिन सामने से एक टीला दृष्टि पड़ा और उसके
नीचे पांच छः सवार पियादों के अनुमान दिखाई दिये कि
चले आते हैं फिर उसने जो सोच के देखा तो न वे सवार हैं न
वें पियादे क़बुरिस्तान है तब हातिम ने जाना कि ये सःहब
कमालों की क़बरें हैं और वह शब्द भी यहीं आता होगा
यहां देखा चाहिये इतने में रात हुई यह शब्द फिरि सुनप
ड़ा हातिम परमेश्वर के स्मरण में मन लगाये था जब
पहर रात गई तब एक एक क़बर से एक एक मनुष्य म
हात्मा निकले और बहुत स्वच्छ बिछौना बिछाये और दि
व्य वस्त्र पहिन के अपनी २ गद्दी पर बैठे इतने में एक मनु
ष्य महादुर्दशा से धूर भरे मैले कपड़े पहिने नंगे पैरों कि
सी टूटी फूटी क़बर से निकला और धरती पर बैठ गया वे
सब गद्दी पर बैठे कहवे पियाकिये न उसकी ओर किसी
ने आंख उठा के देखा न किसी ने एक पियाला कहवे का दि
या तब उसने उसास ले पुकार के कहा कि मैंने वह का
म न किया जो आज की रात मेरे काम आता हातिम ने सु
नतेही कहा कि धन्य परमेश्वर की कृपा कि मैं आज अप
ने मन वांछित स्थान को पहुंचा इतने में बहुत से थाल
आकाश से उन महात्माओं के आगे आये उन थालों में ए
क एक खीर और एक एक पानी का कटोरा था उन थालों से
एक थाल अलग था उन्होंने खाने के समय आपुस में क
हा कि आज की रात एक मुसाफ़िर हमारे यहां मिहमान
है उसको लाओ कि यह थाल उसके लिये आया है उन

मे से एक उठा और हातिम को ला एक मसनद पर बैठाल
के थाल उसके आगे रखदिया हातिम ने उसकी ओर दे
खा जो मैला कुचैला उनसे दूर धरती पर बैठे करा ह
रहा था और एक थाल उसके भी आगे धरा था उस
में एक कटोरा थूहड के दूधका कंकरियों से भरा हुआ
और एक कटोरे मे पीव और रुधिर भरा था यह देख
हातिम सिर झुका के खाना खाने और उसकी ओर दे
खने लगा इतने में सब खाचुके तब हातिम ने उनसे
कहा कि मैं आप से कुछ बिनती किया चाहता हूं जो आ
ज्ञा हो तो कहूं उन्होंने कहा कि कहो तब हातिम बोला कि
यह क्या कारण है कि तुम प्रतिष्ठा पूर्वक गद्दियों पर बैठे
ऐसे स्वादिष्ट खाने खाओ और यह दुखी रो रो के धरती
पर बैठे थूहड कादूध पिये उन्होंने कहा कि हम इस भेद
को नहीं जानते तू उसी से पूछ हातिम वहां से उठके उस
के पास गया और कहने लगा कि तू ने ऐसा क्या पाप
किया जो इस दुःख में पड़ा परमेश्वर के लिये कुछ तो
कह वह इस बात के सुनतेही आंखों में आंसू भर के क
हने लगा कि मैं उन्हीं लोगों का सिरदार हूं मेरा नाम यू
सफ़ सौदागर है और सौदागरी के लिये शहर ख़वार
ज़्म को जाता था कृपण भी ऐसा था कि कभी परमेश्व
र हेत कौडी पैसा दाना पानी कपड़ा लत्ता न आप दिया
न किसी को देने दिया जो कोई नौकर चाकर मेरी चोरी
से किसी को देता और मैं जानता तो उसे रोकता कि अ
पना धन क्यों खोता है बहुधा ग़ुलामों को पुण्य कर
ने पर मारता वे कहते कि हम परमेश्वर के हेत देते
हैं कि यह परलोक में हमारे काम आवेगा मैं उन पर
हंसता जब वे सिखाते तब मैं न सुनता और कुछभीनमान

ता एक दिन चोर आपडे हम सवों को लूटामारा और यहीं
गाडदिया उन्होंने अपनी दातव्य से ऐसी पदवी पाई मैं
अपनी कृपणतासे इस आपदामें फंसा हूं चीन का रह
ने वाला हूं मेरी संतान भी दुर्दशा में टुकडे मांगती फिर
ती है और मेरे कोठों के पास एक वृक्ष के नीचे बहुतसा
धन रत्न गडा है पर मेरा दुर्भाग्य है कि सब मेरे नौंकर
गद्दियों पर बैठ दूध भात खाते हैं और ठंढा पानी पी
ते हैं और स्वर्ग के धागे पहिनें हैं और मैं ऐसी दुर्दशामें
फंसा हूं सच तो यह है कि अपने किये का फल पाता हूं
हातिम ने कहा कि कोई बात तेरे उद्धार की भी है उसने क
हा कि मैं तो बहुत दिनों से रोरो पुकारता हूं पर मेरा दुःख
कोई नहीं सुनता तू ने आज की रात आके इतना पूछा है
जो तुझे परमेश्वर ने श्रद्धा दी है तो मेरी हवेली चीन शहर
में सौदागरों के महल्ले में यूसफ़ सौदागर के नाम से वि
दित है वहां जाके महल्ले वालों से यह वृतांत कह निश्च
य है कि मेरे लडके वाले तेरे पास आवें तू यह बात उनसे
कह कि उस जगह मेरा असंख्य द्रव्य और रत्न गडे हैं उ
न को निकाल के चार भाग कर एक तो मेरे लडके वालों
को दे और तीन भाग परमेश्वर के हेत भूखों को खाना
खिला नंगो को कपडे पहिना मुसाफ़िरों को राह ख़र्च दे
आशा है कि तेरी कृपा से मेरा उद्धार हो और उनके पास
बैठ के स्वदिष्ट भोजन करौ और मधुर शीतल जल पियौं
हातिम ने सौगंद खाके कहा जो मैं तेरा काम अच्छे प्रकार
करके तुझे इस दुःख से न छुडाऊं तो तै के बीज से नहीं
निदान हातिम रात को वहीं रहा और देखा किया कि व
ह रात उनको आनंद करते और उसको कराहते रोते बी
ती जब प्रातः काल हुआ वे सब अपने अपने स्थानों

में गये ओैर हातिम चीन की ओर चला बहुत दिनों मे
चलता चलता केश सहता एक जगह जा पहुंचा क्या दे
खता है कि एक मनुष्य कुये पर खड़ा पानी भरता है उ
सने वहां जाके चाहा कि उसके हाथ से डोल लेके पानी
पिये इतने में एक सांपने हाथी की सी सूंड मुहनिकाल
उस मनुष्य की क़मर पकड़ कुये में खींच लिया यह देख
हातिम हाथ मल मल कहने लगा कि हे दुष्ट तू ने यह।
क्या किया जो इस परदेशी को लेगया वहां उसके बाल ब
चे यह आशा करते होंगे कि बाबा जान कुछ खर्च भेजेंगे
वा आपही लिये आते होंगे तू ने यहां उसके प्राण हीं लि
लिये फिर अपने जी में समझ के कहने लगा कि हातिम
बड़ा सोच है कि तू यह दशा अपनी आखें से देखे औ
र उसकी सहाय न करे तो परमेश्वर को क्या मुह दिखा
वेगा और संसार में तेरा नाम क्या रहैगा यह कह के।
कुये में कूद पड़ा और थोड़ी दूर चलागया जब पैर ध
रती में लगा तब आंखें खोल के देखा तो न वह कुआ
है और न वह पानी एक जगह बहुत चौड़ी सुदार वृक्षें
से हरी भरी लहलहाती पाई और उन वृक्षें में एक सु
थरा महल चमकता दिखलाई दिया वह उसी की ओ
र चला और जी में कहता था कि उस मनुष्य को वह कहं
ले गया और यह सब कहां से उपजा इसी सोच में उस म
हल के पास पहुंचा तो क्या देखता है कि अच्छा महल औ
र सवारी हुई बैठके जगह २ बनी हैं एक मकान में बिल्लौर
का तख़्त बिछा है उसके नीचे एक लम्बा मनुष्य वृक्ष सम
न सोता है उसको देख वहां गया और कहा कि थोड़ा आगे
जाके देखिये कि मकान में यह कौन है जब पास पहुंचा
तब उसके सरहाने खड़ा हो जी में कहने लगा। कि जब यह उ

होगा तब इस्से वृतांत पूछोंगा इतने में वही सांप मुसा
फ़िर को बाग़ में किसी जगह छोड़ हातिम की ओर लप
का हातिम मुसाफ़िर के कारण क्रोध भरा तो चाही उसै
दोनों हाथों से पकड ऐसा दबाया कि वह चिल्लाने लगा
उसके चिल्लाने से देव चौंक पडा और पुकारा कि तू क्या क
रता है यह मेरा पैक है छोड दे हातिम ने कहा कि जबतक
मुसाफ़िर को न छोड़ैगा तब तक मैं इसै न छोडूंगा यह
बात सुन देव ने सांप से कहा कि सचेत हो कि यह कोई ब
डा बली है कि हमारे धोखे को तोडै और तेरे मुह में पैठै
हातिम यह बात सुनतेही सांप के पेट में धसगया तो
क्या देखता है कि एक अंधेरा घर है और सांप का कुछ पता
नहीं कि कहां है यह अचंभे में इधर उधर फिर रहा था कि
इतने में एक ऐसा शब्द उसके कान में पड़ा कि हातिम
इस अंधेरे घर में जो वस्तु तेरे हाथ लगे उसको वे खटके
छुरी से टुकड़े टुकड़े कर डाल तो इस धोखे से निकले नहीं
तो प्रलय तक यही तेरा घर है इसके सुनतेही वह एक
ओर हाथ बढा के टटोलने लगा कि एक वस्तु गाय के समा
न उसके हाथ लगी वह उसने उसै पैनी छुरी से चीर डाला
उसी क्षण एक तालाब समुद्र से भी बड़ा लहरैं खाता उग
ना और हातिम उसमें भी गोता खाने लगा जब दोनी न
गोते खाके उसका पैर धरती में लगा तो आंखें खोल के
जो देखा तो न वह मकान है न वह सांप है न वह पानी है
वह बाग़ है एक बड़ा जंगल देख पडता है और उसमें ह
ज़ारों मनुष्य कोई मरनहार कोई सूख के कांटा होगये
हैं उन्हीं मे वह मुसाफ़िर भी खड़ा है हातिम उसके पा
स जाके पूछने लगा कि भाई तुझे यहां कौन लाया उस
ने कहा कि मुझे एक सांप यहां लाके छोड गया न जाने य

वह क्या हुआ और लोगों ने भी कहा कि हमें भी वही लाय
है पर यह तो कहिये कि आप कैसे आये हातिम ने कहा
कि इस का वृत्तांत ऐसा है कि यह धोखा था मैंने तुम्हारे बै
री को मारा तुम अपने अपने घर जाओ वे कहने लगे कि हे
दयालु हम में से कितने भूख प्यास के मारे मरगये और
कितने मरन हार हो रहे हैं परमेश्वर आप को इस उप
कार का उत्तम फल दे कि हम तुम्हारी सहाय से इस कष्ट
की फांसी से निकले यह कह सब अपने अपने घरगये
और हातिम उनसे बिदा हो चीन की ओर चला कुछ दिन
में एक शहर के दरवाजे पर जा पहुंचा और भीतर जाने
लगा दरबानों ने रोका कि कहां जाता है पहिले बादशाह
से बातें करले फिर जहां चाहे वहां जाना हातिम ने कहा
कि भाई तुम्हारे शहर का यह क्या चलन है जो मुसा
फिरों को तो सब कोई आराम देता है तुम लोग कैसे हो
जो क्लेश देते हो दरबानों ने कहा कि शहर का रस्ता च
लने से रहगया है इस लिये कि यहां के बादशाह के
एक लड़की है कि उसके सामने बिदेशी को लेजाते हैं
वह उससे तीन बातें पूछती है वह उत्तर नहीं देसक
ता तब प्रातःकाल उसे सूली देती है इसलिये इस श
हर का नाम बेदाद नगर रक्खा है क्योंकि यहां कोई
बिदेशी जीता नहीं बचता निदान हातिम बिबस हो
उनके साथ बादशाह के पास गया और जी में यही
कहता था कि वह क्या पूछती है जब यह बादशाह
के सामने गया तब बादशाह ने पूछा कि तू कौन है औ
र कहां से आया है और तेरा नाम क्या है हातिम ने
कहा कि मनुष्य हूं चीन को जाया चाहता हूं मेरे नाम
से तुम्हें क्या काम है और कहा कि आपके बिना और

और कोई विदशियों को क्लेश नहीं देता अपने यथा श
क्ति सब का आसस्वास करते हैं इसलिये कि भले कह
लावैं और जगत में उनका नाम भलाई में सूर्य के समा
न प्रकाशित रहै यह सुन बादशाह ने रोदिया और
कहा कि क्या करूं कि मेरे ऊपर एक गाज गिरी है पहि
ले इस शहर का नाम अदलाबाद था अब दुर्भाग्य ल
डकी के अन्याय से बेदाद नगर प्रसिद्ध है यहां विदे
शी मारे जाते हैं उसका पाप मेरे सिर पर है फिर हा
तिम ने कहा कि तू उसे मार क्यों नहीं डालता वह बोला
कि आज तक किसी ने लड़की मारी है जो मैं भी मार डालूं
यह सुन हातिम आंखों में आंसू भर के कहने लगा कि
तू विवश है तेरा कुछ वस नहीं परमेश्वर दीन दयाल है
इस बोझ को तेरे सिर से दूर करैगा फिर हातिम को म
हल में ले गया और लड़की का शृंगार कर उसके पास
बैठाल दिया उसे देखते ही हातिम ने मन में कहा कि इ
सके समान अब इस संसार में कोई सुंदर और रूपवती
नहीं हैं और उसकी भी लाज छूटगई और हातिम को प्यार
किया और रूप पर आशक्त होगई और एक जड़ाऊ तख्त
पर हातिम को बैठाल के आप सोने की कुरसी पर बैठ
ई को बुलवा कहने लगी कि अम्माजान मैं आज इस विदे
शी पर मोहित और आशक्त हुई हूं और यह भी बड़े बाप
का बेटा जान पड़ता है प्रातःकाल यह भी सूली दिया जाय
गा वह बोली कि मेरी प्यारी बेटी तेरा भाग्य बुरा है क्या कहूं
छोटे बड़े मनुष्य तेरे हाथ से बहुत मारे गये उनका पाप ते
रे सिर पर है यद्यपि तेरा भाग्य ऐसा नहीं परंतु निश्चय
है कि तेरा काम इसके हाथ से निकलै इतने में हातिम
ने कहा कि भला मैं भी सुनो कि वह कौन सा काम है जि-